(प्राचीन भविष्यवाणियाँ सत्य सिद्ध करती हुई )

# नव सहस्राब्दि

✦ योगी महाजन ✦

(प्राचीन भविष्यवाणियाँ सत्य सिद्ध करती हुई)

# नव सहस्राब्दि

'New Millennium' का हिन्दी अनुवाद

**योगी महाजन**

हिन्दी अनुवाद

श्री.ओ.पी.चान्दना

शुद्ध विद्या की स्रोत
परम-पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
के चरणों में समर्पित

# भूमिका

रंग, जाति, बनावटी सीमाओं एवं युद्धविभीषिका से मुक्त सामूहिक चेतना, सामूहिक विकास, सामूहिक प्रेम की ओर बढ़ते हुए और इस प्रकार प्राचीन भविष्यवाणियों को सत्य सिद्ध करते हुए एक नए विश्व का दिव्य स्वप्न लेकर हम नव सहस्राब्दि में प्रवेश कर रहे हैं।

वर्तमान स्थिति में चाहे हम चाँद या मंगल पर मानव के पहुँचने को महान विकास मान लें परन्तु व्यक्तिगत स्तर पर अब भी हम लोभ, घृणा, ईर्ष्या और भय से परिपूर्ण आदि (अविकसित) मस्तिष्क का बोझ लिए अत्यन्त पिछड़े हुए हैं। शरीर पर फैशनेबल वस्त्र धारण कर लेने मात्र से व्यक्ति आधुनिक नहीं बन जाता, उसे आन्तरिक रूप से भी आधुनिक बनना होगा। यद्यपि मानव मस्तिष्क बहुत उन्नत हुआ है फिर भी अन्तर्दृष्टि में वांछित परिवर्तन नहीं आया। परिणामत: मानव के आचार–विचार और कार्य (मनसा, वाचा, कर्मणा) में एकरूपता नहीं आ पाई।

मध्यकालीन जीर्ण–शीर्ण साज़ो–सामान को साथ लेकर, अपने स्वप्न को साकार करने के लिए नव–विश्व में यदि हम प्रवेश करें तो अपने स्वप्नों को साकार नहीं कर सकते। अत: अन्तर्दर्शन द्वारा अन्त: शुद्धि करना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु अन्तर्दर्शन भी केवल साक्षी अवस्था में ही हो पाता है क्योंकि साक्षी अवस्था अहं और बन्धनों से मुक्त होती है। ध्यान धारणा अहम् और बन्धनों से मुक्ति पाने का सर्वोत्तम मार्ग है। संक्षिप्त में, सहजयोग ध्यान–धारणा करने की अद्वितीय विधि है। श्री माताजी निर्मला देवी प्रदत्त इस नई विधि द्वारा आत्म–प्रकाश–रंजित इक्कीसवीं शताब्दि के अपने दिव्य–स्वप्न को साकार करना सम्भव है। इस पुस्तक के आगामी अध्यायों में, आईए देखें, किस प्रकार ये लक्ष्य प्राप्त करना है।

योगी महाजन

# अनुक्रमणिका


| अध्याय | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1 | स्वप्न विहीन मानव विनाशोन्मुख | 6 |
| 2 | शाश्वत दिव्य शक्ति परमाणु बम से अधिक शक्तिशाली | 11 |
| 3 | त्रिआयामी अन्तर्दृष्टि | 16 |
| 4 | चतुर्थ आयाम का दृष्टि क्षेत्र | 26 |
| 5 | हमारी अन्तर्जात पावित्र्य दृष्टि | 33 |
| 6 | भ्रम एवं कपट | 42 |
| 7 | तनाव प्रबन्धन | 47 |
| 8 | लोगों के हथकंडे | 50 |
| 9 | निर्वाज्य प्रेम का दिव्य स्वप्न | 56 |
| 10 | मैं निर्दोष हूँ | 62 |
| 11 | प्रेम दोष निवारण का एकमात्र मार्ग | 67 |
| 12 | सर्वव्यापी प्रेम का विस्तार | 72 |
| | उपसंहार | 80 |

# अध्याय–1
# स्वप्न विहीन मानव विनाशोन्मुख

आकाश में टिमटिमाते हुए सितारे सभी बच्चों को आकर्षित करते हैं। ज्यों ही बच्चे की दृष्टि सितारों पर पड़ती है वह उन तक पहुँचने के लिए आतुर हो उठता है। उसका दृष्टिक्षेत्र विद्यालय के मैदान तथा घर के आँगन से आगे बढ़ जाता है। शिशु समझने लगता है कि कहीं एक विशाल नव–विश्व उसकी प्रतीक्षा में है। हर रात्रि, आवाजें देकर, सितारे उसे बुलाते हैं और उसकी उत्सुकता को बढ़ावा देते हैं।

युगों से नक्षत्र न केवल प्राचीन नाविकों का पथ–प्रदर्शन ही करते रहे परन्तु ये मानव दृष्टि को मस्तिष्क, अहं एवं बन्धनों की सीमाओं से ऊपर भी उठाते रहे, जहाँ हम सोचते हैं कि ''हम कौन हैं? हम यहाँ क्यों हैं? हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है?'' और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न कि – ''हमारे महान विकास प्रक्रिया में हमें उत्थान प्रदान कर सकने वाले एक ऐसे क्षितीज का सृजन करने का नव स्वप्न हमें क्या बना सकता है?''

स्कूल और महाविद्यालयों की पुस्तकों में जो हम पढ़ते हैं उससे कहीं अधिक शुद्धविद्या के खजाने में निहीत हैं। ईसा से ३०० वर्ष पूर्व एशिया माइनर (Asia Minor) में एसने भाईचारे (Asney Brotherhood) ने शुद्ध–विद्या के खजाने का दोहन किया, ''एक दिन आपकी आत्मा जागृत होगी और आप सभी कुछ जान जाएंगे।

मैं आपको सच्चाई बताता हूँ कि आपका शरीर केवल खाने पीने और श्वास लेने के लिए ही नहीं बना, यह जीवन पावन सरिता (Holy Stream of Life) में प्रवेश करने के लिए भी बना है। और आप पावन पुँज (Holy Stream of Light) से एक रूप हो जाएंगे।'' इससे अधिक नहीं बताया जा सकता कि यह पावन सरिता आपको उस अवस्था में ले जाएगी जहाँ शब्दों का कोई अस्तित्व ही न रहेगा।

मानव दृष्टि जब व्यक्तिगत बौद्धिक संगीर्णता से ऊपर उठती है तो इसका

सम्बन्ध सामूहिक गति–आवृति (Frequency) से जुड़ जाता है, जो केवल नक्षत्रों की गतिविधियों की सूचक ही नहीं हैं परन्तु सम्पूर्ण गृहीय गतिविधियों का स्रोत भी है, अर्थात् यह 'सामूहिक चेतना' (Collective Consciousness) है।

हाल ही में एक रूसी विद्या श्री.शिपोव (Shipov) और भौतिक विज्ञानी अनातोली अकिमोव ने सामूहिक चेतना के इस पक्ष को मान्यता दी, परन्तु उन्होंने माना कि इस उच्च स्तर को नापना कठिन है। सीमित मानवीय चेतना जब सामूहिक चेतना के क्षितीज में प्रवेश कर जाती है तो यह अनन्त, अपरिमेय हो जाती है तब पूर्ण सत्य को वास्तविकता के रूप में अनुभव कर पाना सम्भव हो जाता है। सत्य के प्रकाश में मिथक (काल्पनिकता) वास्तविकता से इस प्रकार पृथक हो जाता है जैसे आकाश गंगा की बाल्य–काल की कहानियाँ छँट जाती है। इसी प्रकार अपने विषय में हमारे बहुत से मिथक, बनी हुई धारणाएँ, विचार तथा मानसिक विश्वास धराशायी हो जाते हैं। फिर भी हम पूर्णत: नग्न नहीं होते। इसके विपरीत हम आन्तरिक मूल्यों, उच्च सिद्धान्तों, दैवी नियमों तथा, सर्वोपरि अपनी आन्तरिक सच्चाई के प्रति परिपक्वता प्राप्त करते हैं। आन्तरिक सत्य के प्रकाश में हमारी दृष्टि प्रकाशमय हो जाती है। यह ज्योतित दृष्टि निरन्तर सत्य पर पड़ती है, करुणा एवं प्रेम सागर जिसका स्रोत है। यह प्रकाश माँ की प्रेममयी आँखों के माध्यम से देखता है। माँ बच्चों के दोषों को जानती है फिर भी उनकी प्रताड़ना न करके प्रेमपूर्वक उन्हें सुधारती है। बच्चे जब असफल होते हैं तो माँ उन्हें त्याग नहीं देती, वह उन्हें प्रेरित करती है। उदाहरण के रूप में, बच्चा जब चलना सीखता है तो वह बार–बार गिरता है परन्तु माँ तब तक उसे प्रेरित करती रहती है जब तक वह भली–भांति चलना नहीं सीख लेता। इस प्रकार प्रेम एवं करुणा–रूपी जहाज़ हमारी दृष्टि को प्रकाश के तट तक ले जाता है। सौभाग्यवश, आधुनिक काल में हमारी आदि शक्ति माँ, माताजी श्री निर्मला देवी, के प्रेम एवं करुणा के माध्यम से हजारों सत्य साधकों के लिए यह प्रकाशमय दृष्टि प्राप्त करना सम्भव हो पाया है। श्री माताजी ने आत्मा के आत्म–ज्ञान की अभिव्यक्ति एक अद्वितीय तरीके से की है जिसे हम 'सहजयोग' कहते हैं। प्रेम एवं करुणा केवल उनकी शिक्षा को सार तत्व मात्र न होकर उनके व्यक्तिगत आनन्द का स्रोत भी है। उनकी उपस्थिति हर व्यक्ति में

इस प्रेम एवं आनन्द का इस प्रकार से संचार कर देती है कि मानव की गहराईयों में अन्तर्निहित सुप्त आदिशक्ति जागृत होकर उसके अन्तर्परिवर्तन की उत्प्रेरक (Catalyst) बन जाती है।

अल्फर्ड नोबल के वंशज तथा यूनाइटेड अर्थ (United Earth) (पर्यावरण एवं मानवीय प्रयत्नों के लिए पुरस्कार) के उपाध्यक्ष मार्कस नोबेल ने श्री माताजी द्वारा आरम्भ की गई अन्तर्परिवर्तन प्रक्रिया का वर्णन इस प्रकार किया: ''काश कि पावन दिव्य प्रेम का सर्वव्यापी आशीष प्रदान करने वाली कोई विधि होती जिसके बदले में हमें कुछ देना न पड़ता!

काश कि मनुष्य जीवन के निकृष्ट स्तर से विकसित हो गया होता और हम चेतना की उच्चतर अवस्था में अब भी विकसित हो रहे होते, हमारे मस्तिष्क और मध्य नाड़ी तन्त्र का विकास हो रहा होता!

काश कि मानव जाति की अतिजीविता (Survival) तथा हमारी विचित्र तथा सुन्दर स्थिति की अतिजीविता मानवीय चेतना के विकास पर निर्भर करती।

काश कि मानवीय चेतना का विकास डार्विन की हजारों पीढ़ियों में होने वाले विकास की अपेक्षा एक ही जीवन–काल में हो जाता! या केवल दोपहर पश्चात् के कुछ घण्टों में!''

अन्तर्परिवर्तन वह प्रणाली है जो प्रेम एवं करुणा की सम्भाव्य आदि–ऊर्जा को अंकुरित करती है ताकि इनकी अभिव्यक्ति हमारे व्यक्तित्व में, विचारों और कार–व्यवहार में हो सके, तत्पश्चात् इसका विस्तार हमारे विचारों, मूल्यों और पारस्परिक क्रियाओं में हो और इस प्रकार यह पूरी मानव जाति में मैल जाए। नि:सन्देह बहुत से लोग स्वयं को अत्यन्त उन्नत एवं उदार मति मानते हैं। हो सकता है कि वे सच्चे आत्म–सुधारक हों और समूह के उत्थान के प्रति समर्पित हों, परन्तु वे बुद्धि के माध्यम से कार्य करते हैं। उनकी बुद्धि उन्हें सामूहिक वितरण एवं कल्याण के सिद्धान्त एवं विधियाँ सुझाती है– जैसे साम्यवाद, समाजवाद, पूंजीवाद आदि–आदि। परन्तु लम्बे अर्से से देखा जा रहा है कि ये सिद्धान्त विफल हो जाते हैं। सोवियत प्रजातन्त्र के टूटने के साथ–साथ यह देखा गया है कि जोर–शोर से चर्च की निन्दा करने वाले रूसी

लोग अब चर्च का पक्ष लेने में सबसे आगे हैं। रूढ़िवादी चर्च तूफान की तरह से वापिस आ गया है। मानवीय बुद्धि की गति क्षैतिज (Horizontal) है। परिणामस्वरूप चर्मान्त (Dead End) तक पहुँच कर यह झटके के साथ वापिस आती है। अत: किसी सामूहिक लक्ष्य के प्रति बौद्धिक रूप से समर्पित होना ही काफी नहीं है, परंतु संयमित रूप से इसे प्राप्त करने के लिए ज्योतित दृष्टि का होना अधिक महत्वपूर्ण है। इतिहास ने महात्मा गाँधी अतातुर्के, कमालपाशा, गैरी बाल्डी, राष्ट्रपति सादात, अब्राहिम लिंकन, मार्टिन लूथर किंग, जार्ज वाशिंगटन जैसे बहुत से दृष्टा उत्पन्न किए हैं।

सूफ़ी, जैऩ मास्टर और भारतीय योगियों ने ध्यान–धारणा के माध्यम से ज्योतित दृष्टि प्राप्त की। परन्तु मुख्य बात ये है कि जब तक व्यक्ति अपने प्रति सच्चा नहीं है तो उसके दर्शन में सत्य की चमक का अभाव होगा। दृष्टा नाटककार शैक्सपियर ने लिखा है, 'स्वयं के प्रति सच्चा होना सर्वोपरि है (Above All to Thine Own Self be True)।' दूसरों को सत्य का पाठ पढ़ाना स्वयं सत्य व्यवहार करने से कहीं सुगम है। शिक्षा और शिक्षकों ने भ्रम एवं हिंसा का बहुत सृजन किया है। शताब्दि के परिवर्तन के समय, आइए हम एक नव युग का स्वागत करें, जिसमें बिना कट्टरवादी हुए सामूहिक भविष्य का स्वप्न देख सके। सागर बन जाने का क्षेम जब आपमें है तो क्यों आप बूंद बने रहें? हम जब महान गुरुओं के सामंजस्य का अमृतपान कर सकते हैं तो क्यों व्यर्थ के विश्लेषण में फँसे रहें। आइए, ईसामसीह, पैगम्बर मोहम्मद, भगवान कृष्ण, बुद्ध, मोजिज़, ज़ोरास्टर, लाओत्से और कन्फ्यूशियस की शिक्षाओं को एक ही माला में पिरोकर एकरूप कर लें और उनके ज्योतित लक्ष्य की ओर अग्रसर हों।

साढ़े तीन कुण्डलों में मानव के अन्तर स्थित शाश्वत शक्ति वर्ष
१९९७ में मास्को में लिया गया चित्र

# अध्याय–2
# शाश्वत दिव्य शक्ति परमाणु बम से अधिक शक्तिशाली

प्लास्टिक के फूल यदि हैं तो वास्तविक फूल भी अवश्य होंगे। यदि सभी सन्तों, द्रष्टाओं, गुरुओं और धर्मग्रन्थों में शाश्वत शक्ति की ओर संकेत किया है तो अवश्य इसका अस्तित्व भी होगा। यह साकार है या निराकार, या इसकी पूजा किस प्रकार से की जाए यह एक भिन्न विषय है।

युग–युगान्तरों से अपने सृष्टा के प्रेम की पूजा करने की अन्तर्जात इच्छा मानव के मन में हिलोरें लेती रही है, बिल्कुल वैसे ही जैसे नवजात शिशु के हृदय में तुरन्त अपनी माँ को पा लेने की इच्छा होती है। हमारे सृष्टा प्रेम के अनन्त सागर हैं। प्रकृति एवं मानवता को प्रेम के सांचे में घड़ा गया है। नि:सन्देह मानव शरीर पंचतत्व से बना है, परन्तु हृदय को कौन धड़काता है? फेफड़े किस प्रकार श्वास लेते हैं, तथा आन्तरिक आनन्द कौन प्रदान करता है? उत्तर है, 'प्रेम की शक्ति'। सृष्टि के सृजन से ही प्रेम की शक्ति मानव में अन्तर्रचित है। इस शक्ति को मानव शरीर की गहनतम गहराइयों में रखा गया जहाँ कोई बाह्य शक्ति उसे बिगाड़ न सके। सभी महान गुरु इस शक्ति से जुड़े हुए थे और उन्होंने इसकी चर्चा की। ईसा मसीह ने इसे आत्मा (Spirit) कहा। इसका वर्णन करते हुए मोजिज़ ने कहा, ''परमात्मा की अग्नि में से आत्मा प्रकट हुई और विश्व का सृजन किया गया।'' मानव में यह आत्मा (Spirit) त्रिकोणाकार पावन अस्थि में प्रेम के अनन्त–कुण्ड के रूप में विद्यमान होती है। सेक्रम (Sacrum) शब्द यूनानी भाषा का है जिसका अर्थ है 'पवित्र'। स्पष्ट है कि प्राचीन यूनानी लोग इस सत्य को जानते थे कि यह पवित्र शक्ति इस अस्थि में निवास करती है।

कुण्डलिनी नामक इस शाश्वत आन्तरिक शक्ति का ज्ञान ईसा से पाँच हजार वर्ष पूर्व भी भारत में विद्यमान था क्योंकि तब आत्मा के ज्ञान के बिना शिक्षा अधूरी मानी जाती थी। शिक्षा भौतिक पदार्थों का अध्ययन मात्र न होकर मुख्यत: आत्मा का अनुभव होती थी। वर्ष दो हजार में कुबेर (यमन) (Pluto) नक्षत्र के प्रवेश ने अध्ययन के संक्षिप्त क्षण का मंथन कर दिया है जिसमें हमें आत्मज्ञान खोजना है और आत्मा की आन्तरिक शक्ति को अनुभव करना है

तथा जीवन्त संघटन के रूप में अपने अन्तर्जात आधार को खोजना है। हमारी कोशिकाओं का नवीनीकरण किस प्रकार होता है? किस प्रकार वो स्वस्थ एवं सन्तुलित होकर अपनी वास्तविक रूप रेखा को बनाए रखते हुए अपने आकार का पुनर्आवर्तन (Recycle) करती है? किस प्रकार एक ज़ख्मी तन्तु अपने पूर्व आकार में पुनर्जीवित हो जाता है? मानव शरीर भ्रूण के अतिरिक्त क्यों सभी बाह्य तत्वों (Foreign body) को बाहर फेंक देता है? महागुरु सुकरात भी यही उत्तर खोज रहे थे, अन्त में उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि 'स्वयं को पहचानो' (Know Yourselves)। स्वयं को पहचानने की कला पुस्तकों से नहीं सीखी जा सकती। यह अन्तर्ज्ञान है, आत्मज्ञान है जिसे प्राप्त करके व्यक्ति सब कुछ जान जाता है। आणाविक क्षेत्र से ऊपर का ज्ञान भी उसे हो जाता है। जिस व्यक्ति को आत्म–ज्ञान का अनुभव हो गया है वह उसे अन्य लोगों को भी दे सकता है। बिना श्री माताजी की कृपा के इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए पूरा जीवन भी कम है।

इसी ज्ञान के विषय में बताते हुए हमारे भगवान ईसा मसीह ने कहा,

और येशू ने अपने ग्यारह शिष्यों से कहा, ''मेरे प्रयाण के विषय में सोच कर दुखी मत होओ, मेरे चले जाने में ही हित है। मैं यदि नहीं जाऊँगा तो सुखदाता माँ (Comforter) आपके पास नहीं आएंगी। साक्षात् शरीर में होते हुए मैंने ये सब बातें कीं, परन्तु जब पावन चैतन्य लहरियों (Holy Breath) का साम्राज्य आ जाएगा तो ये आपको बहुत अधिक शिक्षा देंगी और मेरे कहे हुए सभी शब्द आपको स्मरण करवा देंगी। अभी भी बहुत सी बातें बताई जानी आवश्यक हैं; ये ऐसी बातें हैं जिन्हें यह काल नहीं स्वीकार कर सकता क्योंकि ये सब बातें इसकी समझ से ऊपर हैं। परन्तु, लो, मैं कहता हूँ परमात्मा का महान दिवस (अन्तिम निर्णय का दिन) आने से पूर्व पावन चैतन्य लहरियाँ सभी रहस्यों को खोल देंगी। आत्मा के रहस्य, जीवन, मृत्यु, अमरत्व तथा मानव की दूसरे मानव तथा परमात्मा के प्रति एकरूपता के रहस्य को। तब ये विश्व सत्य की ओर चल पड़ेगा और मानव स्वयं सत्य बन जाएगा। जब ये सुखदाता (Comforter) माँ आएंगी तो ये विश्व को मेरे बताए गए सत्य एवं अपराध तथा न्याय के निर्णय की विवेकशीलता के विषय में विश्वस्त कर देंगी : तब विषयासक्त जीवन के स्वामी (Prince) को निकाल फेंका जाएगा। और जब ये

सुखदाता माँ आएंगी तो मुझे आपके लिए उनसे अनुनय नहीं करना पड़ेगा: क्योंकि तब आपको मान्यता प्राप्त हो चुकी होगी और परमात्मा आपको मुझसे भी कहीं अधिक जानते होंगे। '' (अध्याय १६२, V-4 (जीसस वार्ता) ईसा मसीह का कुम्भ उपदेश (The Aquarian Gospel))

सौभाग्यवश श्री माताजी निर्मला देवी के अवतरण से यह भविष्यवाणी सत्य साबित हो गई है। सहजयोग की अद्वितीय पक्रिया, जिसके द्वारा श्री माताजी पावन अस्थि में स्थित प्रेम की शक्ति को जागृत करती है, ये आत्मानुभव प्राप्त करना सत्य–साधकों के लिए सम्भव हो गया है। श्री माताजी कहती हैं, ''हम सबमें आत्मा विद्यमान है। वे आपकी अपनी (individual) माँ है जो आपका पोषण करती हैं और आपकी पावन अस्थि में निवास करती है। यह शक्ति कुण्डलिनी कहलाती है। यही शान्ति, पोषण, प्रेम एवं करुणा बन जाती है। पावन अस्थि में साढ़े तीन कुण्डलों में सुप्त अवस्था में बैठकर किसी आत्मसाक्षात्कारी द्वारा जागृत किए जाने के उचित अवसर की यह प्रतीक्षा करती है। यह आपकी अपनी माँ है। किस प्रकार यह आपको हानि पहुँचा सकती है? आपके विषय में ये सभी कुछ जानती हैं और आपको पुनर्जन्म प्रदान करने की उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा कर रही है।''

सहजयोग किसी कला या बुद्धिमता पर निर्भर नहीं है। यह तो एक सूक्ष्म शक्ति के माध्यम से कार्य करता है, एक ऐसी शक्ति के माध्यम से जो अन्दर और बाहर विद्यमान है। हमारे अन्दर कुण्डलिनी नामक यह संघटित शक्ति हमारी क्रियाओं तथा प्रतिक्रियाओं का उत्तर देती है। आत्मा का ज्ञान ज्यों–ज्यों हमारे मध्य नाड़ी तन्त्र को ज्योतित करता है। हम वास्तव में चैतन्य लहरियों के रूप में अपने अन्दर आत्मा की अभिव्यक्ति महसूस करते हैं। हमारा चित्त जब आन्तरिक चेतना पर जाता है तो हम किसी की भी कुण्डलिनी तक पहुँच सकते हैं। अन्य लोगों में भी हम कुण्डलिनी, इसका स्वभाव और इसकी स्थिति महसूस करने लगते हैं। इस प्रकार हममें सामूहिक चेतना स्थापित होने लगती है और हम सार्वलौकिक मानव बन जाते हैं। कुछ समय पश्चात् हमें कोई अन्य (दूसरा व्यक्ति) नज़र नहीं आता। प्रेम की शक्ति इतनी महान है कि अपनी अंगुलियों के इशारे से हम दूसरों की कुण्डलिनी को चला सकते हैं। इसी प्रकार मानव का सामूहिक विकास घटित हो रहा है और इसी प्रकार इस कुम्भ युग

(Aquarian Age) (मूलाधार से जागृति का युग) में सत्य–असत्य में अन्तर किया जा रहा है। दिलचस्प बात ये है कि ये घटना पाँचवी शताब्दि के पैगम्बर जॉन जेरोसलम के स्वर्णिम सहस्राब्दि के तदनुरूप है:

''इस सहस्राब्दि की समाप्ति के पश्चात् जो सहस्राब्दि आएगी, उसमें लोगों की आँखें पूर्णत: खुल जाएंगी। अब वे मस्तिष्क तथा नगरों की जेल में बन्द नहीं रहेंगे। वे पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक देख सकेंगे और एक दूसरे को समझ पाने की योग्यता उनमें होगी। वे जान जाएंगे कि कोई कार्य यदि एक व्यक्ति को कष्ट पहुँचाता है तो उससे दूसरे व्यक्ति को भी कष्ट पहुँचेगा। मानव एक विशाल सामूहिकता बना लेंगे, हर व्यक्ति जिसका एक छोटा सा अंग होगा। सभी मिलकर इसके हृदय की सृष्टि करेंगे (अर्थात् इस शरीर में प्राण डालेंगे)। हर व्यक्ति सामूहिक (चैतन्य की) भाषा बोलेगा और इस प्रकार, अन्तत: एक यशस्वी मानवता की सृष्टि होगी .....

..... क्योंकि एक महिला का आगमन होगा और जो सर्वस्वामिनी होगी; वे भविष्य का संचालन करेंगी और मानव को अपने दर्शन (Philosophy) का आदेश देंगी। इस सहस्राब्दि के पश्चात् आने वाली सहस्राब्दि की वे जननी (Mother) होंगी। शैतान के साम्राज्य (Days of the Devil) के पश्चात् वे माँ के मृदु माधुर्य को विकीर्णित करेंगी। बर्बरता–काल के पश्चात् वे सौन्दर्य को मूर्त रूप प्रदान करेंगी। इस सहस्राब्दि के पश्चात् आने वाली सहस्राब्दि भारहीण युग (Age of Lightness) में परिवर्तित हो जाएगी : लोग परस्पर प्रेम करेंगे, मिल बाँटकर लेंगे, स्वप्न और स्वप्न साकार हो जाएंगे .....

इस प्रकार मानव पुनर्जन्म प्राप्त करेगा। आत्मा अधिकतर लोगों को अभिभूत कर लेगी और जो भाईचारे के सूत्र में बँध जाएंगे। इस प्रकार बर्बरता के अन्त की उद्घोषणा होगी। यह युग विश्वास की नवशक्ति का होगा। इस सहस्राब्दि के पश्चात् आने वाली सहस्राब्दि के आरम्भिक स्याह काल (Dark Days) के पश्चात् आनन्दोल्लास के दिन आएंगे। मनुष्य एक बार फिर मानवता का धर्मपरायण मार्ग पा लेगा और पृथ्वी एक बार फिर सामंजस्य प्राप्त कर लेगी, स्वर संगत हो उठेगी।

ऐसी सड़के होंगी जो पृथ्वी के छोर को आकाश से जोड़ देंगी; जंगल एक

बार फिर गहन हो जाएंगे, मरुस्थल सिंचित हो जाएंगे और जल पुन: पावन (स्वच्छ) हो जाएगा।

पृथ्वी उद्यान सम हो जाएगी : मानव सभी जीवन्त चीज़ों की देखभाल करेगा और अपने द्वारा गन्दी की गई हर चीज़ को साफ करेगा। वह समझ जाएगा कि पूरी पृथ्वी उसका अपना घर है और भविष्य के विषय में वह विवेकपूर्वक सोचेगां मानव को अपने शरीर तथा पृथ्वी पर विद्यमान हर चीज़ का ज्ञान होगा।

प्रकट होने से पूर्व रोगों का उपचार हो जाएगा और हर व्यक्ति स्वयं का तथा परस्पर रोग उपचार करेगा। मनुष्य समझ लेगा कि ईमानदारी–पूर्वक खड़े होने के लिए उसे अपनी सहायता करनी होगी; मौन एवं लालच के काल के पश्चात् मनुष्य अपना हृदय तथा जेब गरीबों के लिए खोल देगा; वह स्वयं को मानव जाति के अभिभावक के रूप में परिभाषित करेगा। इस प्रकार, अंतत: एक नव युग का आरम्भ होगा। जब मानव मिल–बाँटकर खाना सीख लेगा तो अकेलेपन के कड़वे दिनों का अन्त हो जाएगा। एक बार फिर वह आत्मा में विश्वास करने लगेगा और बर्बर लोगों की बात को नहीं सुना जाएगा ..... परन्तु भयानक अग्नि और युद्धों के पश्चात् यह सब घटित होगा, शीनार देश के जले हुए स्तम्भों (Burnt Towers of Babel) की राख में से यह सब उत्पन्न होगा। अव्यवस्था की इस स्थिति को काबू करने तथा मानव को उचित मार्ग पर लाने के लिए एक शक्तिशाली हाथ की आवश्यकता होगी।

मानव समझ जाएगा कि सभी जीवों का सम्मान होना चाहिए। अपने जीवन काल में ही मानव एक से अधिक जीवन व्यतीत करेगा और समझ जाएगा कि ज्योति कभी बुझती नहीं ..... ''(जेरोस्लम के जॉन का जन्म वर्ष १०४२ में वेसले वेनिडिक्टाइन मोनेस्टरी (Benedictine Monastry of Vezelay) के समीप फ्रांस में हुआ जहाँ वे स्वयं भी सन्त (Monk) बन गए। १११९ में आठ अन्य शूरवीरों (Knights) के साथ नाइटस टेम्पलर (Knights Templer) पद्धति (Order) की स्थापना की और भविष्यवाणियों की पुस्तक (Book of Prophcies) लिखी गई। मास्को के समीप सागोर्स्क मठ (Monestary of Sagorsk) से जीनक्लॉड लेटिस (Jean Claude Lattes) १९९४ संस्करण में से पुरा लेखों के लि लिवरे व डी प्रोफेटिस (Le Livre Des Prophetis) सम्पादित हस्तलिपि के रूप में हाल ही में इस पुस्तक की पुनर्खोज की गई है।)

# अध्याय–3
# त्रिआयामी अन्तर्दृष्टि

अमेरिका, भारत तथा पूर्वी देशों में प्राचीन कबीले प्रकृति की शक्तियों की पूजा किया करते थे। पृथ्वी, सूर्य, चाँद, समुद्र, वायु सभी शक्तियाँ मानव जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। इन शक्तियों से जो भी उपलब्धियाँ हमें प्राप्त होती हैं, उनके लिए इनके प्रति कृतज्ञ होना आवश्यक था। ऐसा प्रतीत होता है कि इन लोगों को ये विश्वास था कि इन शक्तियों को प्रसन्न करने से उन्हें इनसे प्रचुर मात्रा में आशीर्वाद प्राप्त होंगे।

उपजाऊपन तथा पोषण का स्रोत होने के कारण पृथ्वी का माँ के रूप में सम्मान किया जाता था। अपनी ऊर्जा से फसलों को पकाने की शक्ति के कारण सूर्य पौरुष शक्ति का प्रतीक माना जाता था तथा शीतलीकरण गुण के कारण चाँद मादा सहनशील शक्ति का प्रतीक। इसी धारणा के अनुरूप ज़ेन गुरुओं (Zen Masters) ने ऊर्जा को नर और मादा (Yin and Yang) के रूप में विभाजित किया।

आश्चर्य की बात है कि मानव मस्तिष्क भी नर और मादा आयामों में विभाजित है। मस्तिष्क का बायां भाग पौरुष शक्ति का प्रतीक है तथा सूर्य मार्ग (Sun Channel) के माध्यम से शरीर के दाईं ओर की गतिविधियों को देखता है। मस्तिष्क का दायां भाग मादा शक्ति है जो चन्द्र मार्ग के माध्यम से शरीर के बाईं ओर की गतिविधियों को देखती है। मानव व्यक्तित्व में इनमें से किसी भी आयाम का प्रभुत्व हो सकता है या यह अत्यन्त अस्थिर व्यक्तित्व हो सकता है जो पैण्डुलम की तरह से एक आयाम से दूसरे आयाम की तरफ दोलित (Oscillating) होता रहे। हर व्यक्तित्व दूसरे से भिन्न है तथा अपनी ही अद्वितीय संयोजन तथा क्रम परिवर्तन (Combination and Permutation) की अभिव्यक्ति करता है। इन संयोजनों तथा क्रम परिवर्तनों का एक विशेष गुण ये है कि ये स्थायी नहीं है, आसानी से प्रभावित हो जाते हैं और तेजी से बदलती हुई परिस्थितियों को अपना लेते हैं। इस संयोजन तथा क्रम परिवर्तन का मानव पर महत्वपूर्ण प्रभाव भी पड़ता है। संभवत: यही विशेष गुण मानव को ब्रह्माण्ड का

सर्वाधिक अप्रत्याशित जीव बनाता है। संस्कृतियों तथा सभ्यताओं में भिन्नता तथा भाईचारा लाकर इन्हें वैचित्र्य प्रदान करने के लिए भी यह जिम्मेदार है। उदाहरण के रूप में चन्द्र मार्ग से प्रभावित दो व्यक्ति सुगमता से घी–खिचड़ी हो सकते हैं। मुख्यत: चन्द्र मार्गी व्यक्ति सूर्य मार्ग प्रधान व्यक्ति के बौद्धिक विचारों पर भावावेश में आकर प्रतिक्रिया कर सकता है।

माताजी श्री निर्मला देवी की शिक्षाओं के अनुसार शरीर के बाएं भाग में चन्द्र मार्ग पर, हमारी शुद्ध इच्छा शक्ति विद्यमान है। चन्द्र मार्ग शरीर के बाएं भाग को रीढ़ के निचले छोर से लेकर सिर के तालू भाग तक संचालित करता है। यह पूर्वस्मृतियों और इच्छाओं को चेतन स्तर पर लाता है तथा ये स्मृतियाँ और इच्छाएं कार्यान्वन के लिए उत्प्रेरक (Catalyst) बन जाती है। जब तक ये मार्ग गतिशील होता है मनुष्य में जीवित रहने की इच्छा बनी रहती है। ये शक्ति जब बाईं ओर से हट जाती हैं तो व्यक्ति जीवित नहीं रहता। ये मार्ग भावनाओं को जागृत करके मस्तिष्क के दाएं भाग में प्रतिअहं की सृष्टि करता हैं तो दूसरे शब्दों में यह मनस (Psyche) का द्योतक है। फिर भी, इच्छा को कार्यान्वित करने और इसकी तृप्ति करने का कोई साधन तो होना चाहिए। शरीर के दाईं ओर सूर्य मार्ग पर यह शक्ति कार्यान्वन करने का मन बनाती है। शरीर में यह प्रेरणात्मक शक्ति ही क्रिया शक्ति है। कार्य करने के लिए व्यक्ति को भौतिक शरीर एवं बुद्धि का उपयोग करना पड़ता है। शारीरिक और बौद्धिक, गतिविधि के उपफल के रूप में यह मार्ग (सूर्य नाड़ी) मस्तिष्क के बाईं और अहं का सृजन करता है। सूर्य मार्ग में पुरुषत्व के गुण (Yang Qualities) समाहित होते है जैसे विश्लेषण, स्पर्धा, आक्रामकता आदि। चन्द्र नाड़ी में मादा गुण (Yin Qualities) जैसे मृदुता, प्रतिसंवेदना, सहयोग तथा अन्तर्संवेदना आदि समाहित होती हैं। बायाँ और दायाँ दोनों सूक्ष्म मार्ग मेरुरज्जु के बाहर स्थूल भौतिक शरीर में अनुकम्पी नाड़ी प्रणाली (Sympathetic Nervous System) की अभिव्यक्ति करते हैं।

मस्तिष्क के दो गोलार्ध परस्पर विरोधी परन्तु संपूरक क्रियाएं करते हैं। शरीर के दाएं हिस्से को देखने वाला बायाँ गोलार्ध सोच–विचार, अभियोजना और विश्लेषण जैसी रेखीय क्रियाओं में विशेषज्ञ है। शरीर के बाईं ओर को देखने वाला दायाँ गोलार्ध भावनाओं, स्मृति और इच्छाओं आदि में लिप्त है।

कार्यशील होकर, अज्ञानतावश व्यक्ति सोचता है कि वही सब कुछ कर

रहा है यद्यपि वास्तविकता ये है कि केवल निर्जीव कार्य कर सकता है। सारा जीवन्त कार्य तो प्रकृति करती है। उदाहरण के रूप में मनुष्य पेड़ उगा नहीं सकता पेड़ को काट सकता है, इसकी हत्या कर सकता है और इससे फर्नीचर बना सकता है। परन्तु जीवन्त कार्य करने के मिथ्या विचार उसके अहं को शक्ति प्रदान करते हैं। वह अपनी सारी उपलब्धियों को गिनता है, उसका अहं गुब्बारे की तरफ से फूलता चला जाता है और एक स्थिति वह आ जाती है जब मस्तिष्क में और फूलने के लिए स्थान नहीं बचता। परिणामस्वरूप तनाव (चन्द्र मार्ग) पर दबाव पड़ जाता है।

अत्यधिक बौद्धिक और भविष्यवादी लोग भौतिक लाभ के लिए तथा दूसरों को वश में करने के लिए स्वार्थी हो उठते हैं। दाईं ओर के (आक्रामक प्रवृत्ति) भविष्यवादी लोग रह चीज़ को बहुत तेजी से करना चाहते हैं और इस प्रक्रिया में वर्तमान के आनन्द को खो देते हैं। द्रुत–गति व्यापारी प्राय: लाखों बनाने में इतना व्यस्त होता है कि इस धन का आनन्द लेने का समय उसे नहीं मिल पाता। इसके अतिरिक्त उसका व्यक्तित्व अत्यन्त शुष्क, आक्रामक और धूर्त हो जाता है। अहं में अन्धा होकर वह अत्यन्त हास्यास्पद एवं मूर्ख हो जाता है। कुछ हद तक ये तो ऐसा ही हुआ कि एक पुरुष अपनी पत्नी को धक्का मार दे और दरवाजे को चूम ले। ऐसी अवस्था का दूसरा उदाहरण वह व्यक्ति है जो अपनी कार की चाबियाँ पूरे घर में ढूंढता फिरे, उनके गुम होने के दोष दूसरे लोगों को देता फिरे और अन्त में उसे पता लगे कि चाबियाँ उसी के पास थी।

चन्द्र मार्ग की दुर्बलता के कारण तीव्र भावात्मकता जागृत होती है। यह उल्लास और ग्लानि (Elation and Depression) की भावनाओं में नाटकीय दोलन (असन्तुलन) का कारण बनती है। बाईं ओर के (आलसी प्रवृत्ति) लोग बन्धनों में बहुत अधिक जकड़े हुए होते हैं, किसी भी प्रकार के परिवर्तन का वे विरोध करते हैं क्योंकि परिवर्तन से उनमें असुरक्षा की भावना आती है। वे सदैव भूतकाल की महिमा गान करते रहते है। आलसी, नकारात्मक, आत्मअभिभूत होना उन्हें अच्छा लगता है। इस मार्ग के (चन्द्र मार्ग) दबाव के बोझ का परिणाम पागलपन, मिर्गी तथा जराजीर्णता (Lunacy epilepsy and senility) हो सकते हैं। बाईं ओर की पकड़ संक्रामक होती है और विषाणुओं की तरह से आसानी से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक प्रसारित हो जाती हैं। जिन

व्यक्तियों में बाईं ओर के भावावेगी लक्षण गहन होते हैं वे दुर्बल बाईं ओर वाले लोगों में ये विषाणु संचरित कर सकते हैं। दुर्बल, भावुक–व्यक्तित्व इस संक्रामकता के प्रति अति संवेदनशील होता है। भावात्मक लक्षण मनस, मन: स्थिति (मिज़ाज) के रूप में बने रहते हैं जिनका अन्त गहन ग्लानि (Deep Depression) या निराशा में होता है। ऐसा लगता है मानों नकारात्मक लहरियों का संचार स्वत: और अनजाने में हो जाता हो। इनका संचार करने वाले व्यक्ति में ऐसा करने की प्राय: कोई इच्छा नहीं होती, परन्तु इन पर उसका कोई वश नहीं होता। जितने अधिक भावावेग लोगों में होंगे उतना ही अधिक उन भावावेगों को अपने सहयोगियों में संचरित करने की अभिवृत्ति उनमें होगी। हर समय अनजाने में लहरियों का आदान–प्रदान चलता रहता है। मात्र चित्त को दूसरे व्यक्ति पर डालने से हम अपने चक्रों पर उसकी पकड़ को महसूस कर सकते हैं। परस्पर मिलने पर शक्ति या अशान्ति का अनुभव मुख्यत: चैतन्य–लहरियों के प्रभाव पर भावात्मक एकरूपता पर निर्भर करती है। यह संचरण घटित हो जाता है। परन्तु दूसरे व्यक्ति की लहरियों के अपने में प्रसार से बचना या उन्हें बाहर फेंक देना सहजयोग विधियों के माध्यम से सम्भव है।

नकारी चैतन्य लहरियाँ ऐसे सामाजिक विषाणु की तरह से हैं जो अपने साथ संचारक के रोग तथा व्याधियों को लेकर आता है। इसलिए जब कोई व्यक्ति इन चैतन्य लहरियों को आत्मसात करता है जो संचारक की कुछ समस्याओं तथा बीमारियों को अपना लेने की भी सम्भावना होती है। मानों अनजाने में संचारक ने अपनी व्याधियों को दूसरे व्यक्ति पर थोप दिया है। यह संचरण इतना अनोखा होता है कि कभी कभी तो थोंपी गई नकारात्मकता संचरित व्यक्ति में पराश्रयी (Parasite) की तरह से बनी रह सकती है। इसका प्रभाव उसकी बौद्धिक शक्ति पर पड़ता है और वह संचारक के व्यक्तित्व के कुछ गुणों को ग्रहण कर लेता है। यह भी भूत बाधा की तरह से कार्य करती है। चिकित्सा विज्ञान चाहे इसका निदान मनोदैहिक विकार के रूप में करे परन्तु वास्तव में उनके पास उसका कोई इलाज नहीं है। परन्तु सहजयोग ध्यान धारणा के माध्यम से थोपी गई इन व्याधियों से मुक्ति पाना और अपने व्यक्तित्व तथा स्वास्थ्य को पुन: प्राप्त करना सम्भव है। नकारात्मकता से बचने तथा थोपी गई नकारात्मकता से मुकाबला करने में आत्मा की भूमिका अत्यन्त

महत्वपूर्ण है। आत्मा की अपनी ही अन्तर्रचित सुरक्षा–यन्त्र–रचना (Defence Mechanisms) होती है जो नाड़ियों तथा चक्रों के तन्त्र के माध्यम से कार्य करती हैं, बशर्ते कि हम इसकी आवाज की ओर ध्यान दें।

इसका अर्थ ये हुआ कि अपने हित के लिए व्यक्ति को सकारात्मक चैतन्य लहरियों के क्षेत्र में बने रहना चाहिए, सकारात्मक चैतन्य लहरियों वाले लोगों के सानिध्य में रहना चाहिए और सर्वोपरि, अपना सन्तुलन बनाए रखना चाहिए ताकि व्यक्ति बाह्य नकारात्मकताओं के प्रति दुर्बल न हो। कुण्डलिनी जब सातवें चक्र का भेदन करती है तब मनुष्य साक्षी अवस्था में प्रवेश कर जाता है और आस–पास की नकारात्मकताओं का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता। हर चीज़ को उसे ज्ञान होता है फिर भी किसी चीज़ में वह लिप्त नहीं होता। अत: हमारे उत्थान की अवस्था ही अपने आप में सर्वोत्तम सुरक्षा कवच (Safety Valve) है।

सकारात्मक चैतन्य लहरियों की शक्ति किसी भी प्रकार की नकारात्मकता से कहीं अधिक है। सकारात्मक चैतन्य–लहरियों का संचार किसी भी व्यक्ति की ओर करके उसकी नकारात्मकता को समाप्त कर देना सम्भव है। यदि वह व्यक्ति सकारात्मक चैतन्य लहरियों के प्रति ग्रहणशील है तो प्राय: यह कार्य हो जाता है। तो प्रेम द्वारा हम अन्य लोगों के विकारों पर काबू पा सकते हैं। प्रेममय चैतन्य–लहरियाँ चमत्कार करती हैं। जब अत्यन्त पुराने रोग चैतन्य लहरियों के माध्यम से ठीक हो रहे हैं तो इनसे निर्जीव आदतें और नकारात्मक सोच क्यों नहीं ठीक हो सकती? किसी छोटे से क्षेत्र की जनता जब ध्यान धारणा करने लगती है तो उनकी सकारात्मक चैतन्य लहरियाँ उस समाज का शुद्धीकरण कर देती है और उन पर भी हितकर प्रभाव पड़ता है। एक प्रकार से प्रकृति भी चैतन्य लहरियों के प्रति अत्यन्त संवेदनशील है और अनुकूल दृष्टि से उनका उत्तर देती है। उदाहरण के रूप में, किसानों ने पता लगाया है कि बोने से पूर्व बीजों को चैतन्यित कर लेने पर फसलें कई गुनी हो जाती हैं और फसल की बढ़ोतरी पर बीमारियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और इस प्रकार फसलों की रक्षा करने के लिए रसायनिक खादों की आवश्यकता नहीं पड़तीं सकारात्मक चैतन्य लहरियों के प्रभाव से मौसम के प्रतिमान भी अनुकूल रूप से परिवर्तित हो जाते हैं। नव सहस्राब्दि के इस अवसर पर सहज ध्यान धरने वाले समूह ही ऐसे दल हैं जो विश्व भर में शान्ति, सामंजस्य और अन्तर्सम्बन्ध की चेतना की

गति को बढ़ावा दे रहे हैं।

आइए अब हम पावन अस्थि के मूल में स्थित शाश्वत शक्ति कुण्डलिनी, के अपने दिव्य स्वप्न की ओर लौट चलें। मानव शरीर में कुण्डलिनी के प्रवेश का यदि हम पुनर्अवलोकन करें तो मध्य मार्ग पर हमें एक धुंधली पगडण्डी मिलेगी। यह मध्य नाड़ी तन्त्र है जो तृतीय आयाम की सृष्टि करता है। यह पगडण्डी सिर के शिखर पर तालू अस्थि क्षेत्र (Fontanel Bone) तक पहुँचती है। सहजयोग विधियों के माध्यम से कुण्डलिनी का जागरण होता है। जागृत होकर यह देवदूतों की तरह तालू अस्थि की ओर नीचे के चक्र से ऊपर के चक्र की ओर उठना शुरु कर देती है। इस क्षेत्र में स्वयं को स्थापित करके यह हमें प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति का अंतरंग (गहन) अनुभव प्रदान करती है और हम सत्य, आनन्द और चेतना की अवस्था में आह्लादित हो जाते हैं–एक ऐसी अवस्था में जिसकी अभिव्यक्ति केवल एक कवि ही कर सकता है :

''देख लिया मैंने दिव्य स्वप्न को,
मेरे अन्दर बसी आपकी आत्मा के माध्यम से
अद्‌भुत रहस्यों को सुन लिया मैंने
अपनी गहन अन्तर्दृष्टि के माध्यम से
जीवन्त जल को बहाते हुए शक्ति स्रोत
सर्व हितैषी विवेक एवं सागर प्रेम का
उमड़ पड़ा मुझ में झरना ज्ञान का
शाश्वत प्रकाश की दीप्ति की तरह।''

यह अनुभव हमें तत्क्षण भी हो सकता है और इसमें कुछ समय भी लग सकता है। यह एक अन्य तत्व पर निर्भर करता है जो चतुर्थ आयाम कहलाता है।

चतुर्थ आयाम ऊर्जा के विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों वाले सात चक्रों की सृष्टि करता है। यह परा अनुकम्पी नाड़ी तन्त्र को बनाता है। तालू क्षेत्र में स्थापित होने से पूर्व कुण्डलिनी को यह छः चक्र पार करने पड़ते हैं और यदि चक्रों में रुकावट हो या ये क्षति–ग्रस्त हों तो कुण्डलिनी का कार्य कठिन हो जाता है। फिर भी अन्तर्जात शक्ति का स्रोत होने के कारण उसमें इन चक्रों को ठीक करके इनके अवरोध दूर करने की शक्ति है। इसके लिए कोई नियत समय नहीं होता, केवल सहजयोग ध्यान धारणा तकनीकों द्वारा यह निश्चित रूप से सफल होती है।

अनुकम्पी तथा पराअनुकम्पी नाड़ी तन्त्र मध्य नाड़ी तन्त्र का उपयोग करते हैं। बुद्धि की मनोवेग प्रेरणा मस्तिष्क कोशिकाओं के माध्यम से अनुकम्पी, पराअनुकम्पी एवं मध्यमार्ग प्रणाली की ओर जाती है और इसके द्वारा शरीर कोशिकाओं के तन्तु विवेक प्राप्त करते हैं। अन्यथा एक कोशिका को किस प्रकार इस बात का ज्ञान हो सकता है कि कब विभाजन करना है और कब गुणन? शरीर कैसे जानता है कि अनुकम्पी तथा पराअनुकम्पी नाड़ी तन्त्र से प्राप्त विवेक प्रेरणा में से किस प्रकार जाना है ?

हर कोशिका एक जीवन्त अस्तित्व है और हर जीवन्त चीज़ को अपने जीवाणु कोष (Gene) के माध्यम से चेतना का आश्रय लेना पड़ता है। क्योंकि ये चेतन है इसलिए इसे जीवन्त कहते हैं अन्यथा इसे मृत (जड़) कहा जाता। जिस क्षण इसका सम्बन्ध चेतनता से टूटता है यह मृत (Dead) कहलाती हैं। किसी भी नाड़ी तन्त्र (Channel) पर आवश्यकता से अधिक बोझ उसे क्षुब्ध करता है और उसकी संवेदना धुंधली पड़ जाती है और इस प्रकार इसका प्रेरक दुर्बल हो जाता है। परिणाम स्वरूप नाड़ी तन्त्र अनुकम्पी (ईड़ा–पिंगला) एवं पराअनुकम्पी (सुषुम्ना) नाड़ी तन्त्र से प्राप्त संदेश का कूटानुवाद (Decode) नहीं कर पाता। कोशिकाएं एवं तन्तु गलत ढंग से कार्य करने लगते हैं और और फलत: मनोदैहिक रोग (Psychosomatic Diseases) हो जाते हैं। शरीर के किसी भी अवयव या कोशिका की अवांछित गतिशीलता असन्तुलन की सृष्टि करती है। चक्रों में चैतन्य लहरियों की कमी यदि निरन्तर बनी रहे तो कर्क रोग (Cancer) तक पहुँचा सकती है। इस प्रकार चैतन्य लहरियों के शाश्वत् स्रोत से सम्बन्ध कम होने ही स्थिति मानव शरीर की अवनति का कारण बनने लगती है। माना कि उग्र प्रवृत्ति मानवता को प्रकृति की सुरक्षा से विमुख कर देती है। इसके सन्तुलनकारी प्रभाव के बिना आत्मनाश अवश्यम्भावी है।

चित्त का बाएं या दाएं आयाम पर टिक जाना व्यक्ति को एक तरफा दृष्टि देता है वास्तविकता नहीं। ऐसे सीमित दृष्टिकोण में जब मानव की निष्ठा बन जाती है तो निश्चित रूप से उसे द्वन्दमय ध्रुवत्व (Conflicting Polarity) का सामना करना पड़ता है। सारे द्वन्द का यही कारण है। परन्तु मध्य (मार्ग) में पूर्ण सत्य का दर्शन व्याप्त है, जब नज़रिया एक ही हो जाएगा और एक ही सा भविष्य हो जाएगा तो झगड़े और असहमति का कोई कारण ही न बचेगा।

कुण्डलिनी जब मध्य मार्ग में उठती है तो यह सूर्य एवं चन्द्र आयामों (अहं और प्रति अहं) को मध्य की ओर खींचती है और इस प्रकार आत्म–सन्तुलन एवं मित्र भाव की सृष्टि करती है। आत्म–सन्तुलन के माध्यम से सभी समस्याओं के समाधान स्पष्ट रूप से उभर कर आते हैं। नितान्त बाएं और दाएं आयामों की अपेक्षा मध्य से व्यक्ति स्वाभाविकत: अधिक सन्तुलित रूप से देखता है और इस प्रकार व्यक्तित्व सन्तुलित एवं संघटित हो जाता है। जो समाज स्वाभाविकत: सन्तुलित हो गया है वह शान्त विकासशील एवं वैभवशाली है। उदाहरण के रूप में सूर्य मार्ग अध्ययन एवं विकास की प्रक्रिया में अपनी अभिव्यक्ति करता है। यह गुण नई वास्तु, आचार–आदर्श तथा धारणात्मक विचारों के सृजन की ओर ले जाता है। हम इसे अमूर्त सोच, (Abstract Thinking) प्रतीकात्मक भाषा, असंज्ञात्मक चित्रकारी (Non Verbal Painting) तथा अन्य, कलात्मक आकारों द्वारा अभिव्यक्त करते हैं। कलाकार का दृष्टि क्षेत्र यदि बाएं और दाएं आयामों से आया है तो उसके बन्धन या बौद्धिक ज्ञान उसकी सृजनात्मकता को सीमित कर देंगे। वास्तविकता के अनन्त साम्राज्य में उसकी उड़ान तो केवल तभी हो सकती जब वह पूर्णत: मुक्त हो। व्यक्ति की दृष्टि जब मध्य में होगी तभी उसे पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हो सकेगी। क्योंकि मध्य मार्ग ही उसे सृजनात्मकता के अनन्त स्रोत, सामूहिक चेतना (Collective Consciousness) से जोड़ता है।

चार वर्ष पूर्व एक बर्तानवी भौतिक वैज्ञानिक रोज़र पैनरोज (Roger Penrose) ने नव ज्ञान के स्रोत का विश्लेषण किया। आधुनिक गणित एवं भौतिक विज्ञान के अनुरूप उसने यह विश्लेषण किया। उसने बताया कि हम प्रमेयों (Theorems) और नियमों के प्रमाणों को समझ सकते हैं। परन्तु नए ज्ञान के स्रोत को हम केवल तभी समझ सकते हैं जब हम ये मान लें कि कहीं पर आँकड़ों का भण्डार विद्यमान है जो हर चीज़ के विषय में पूर्ण सूचना अपने में समाहित किए हुए है। परन्तु वह इस बात को स्पष्ट न कर पाया कि किस प्रकार ये ज्ञान वैज्ञानिकों के मस्तिष्क में प्रवेश कर जाता है।

सहजयोग की खोज से पूर्व यह बात स्पष्ट न थी कि किस प्रकार यह ज्ञान मानव मस्तिष्क में प्रवेश कर जाता है। सापेक्षता के सिद्धान्त (Theory of relativity) की खोज के विषय में आइन्स्टाइन ने भी बिल्कुल यही बात कही।

उसने कहा, ''मैं नहीं जानता कि कहाँ से, किसी अनजाने स्रोत से यह मुझमें प्रकट हो गई।'' कुण्डलिनी जागृति के अनुभव से यह स्पष्ट हो जाता है कि कुण्डलिनी जब सातवें चक्र का भेदन करती है तो यह मानवीय चेतना को दिव्य प्रेम एवं सृजनात्मकता की सर्वव्यापक शक्ति से जोड़ देती है। इस योग के पश्चात् व्यक्ति जिन भी आंकड़ों को जानने की इच्छा करता है और उन पर अपना चित्त डालता है, उसे सार्वभौमिक आँकड़ा भण्डार (Cosmic Data Bank) से यह सब प्राप्त हो जाते हैं। यही भण्डार उस कला को प्रेरित करता है और यह कला समाज को उत्थान प्राप्ति के लिए आमंत्रित करती है। उदाहरण के रूप में माइकल ऐनजलो, लियोनार्डो–डा–विनसी, रेफल रेमब्रैन्ट (Michelangelo, Leonardo De Vinci, Raphael Rembrandt) की कला चैतन्य लहरियों के स्तर को उठाती है। चैतन्य लहरियों का सहयोग साधक को चेतना की उच्चावस्था में ले जाता है और साधक निर्विचार समाधि में पहुँच जाता है। पुनर्जागरण कलाकारों (Renaissance Artists) द्वारा बनाए गए माँ और बच्चे (Medonna and Child) के चित्र चैतन्य लहरियों के सागर उमड़ा देते है। बॉश, मोजर्ट, विथोवन, विवाल्डी, स्ट्रॉस, शुबर्ट (Bach, Mozart, Beethovan, Vivaldi, Strauss, Schubert) तथा अधिकतर भारतीय शास्त्रीय संगीतज्ञों का संगीत हमें आत्मा की गहराइयों तक ले जाता है। ज्यों–ज्यों कुण्डलिनी चढ़ती है मनुष्य गहनता में जाता है और समाज परिपक्व होता है। ये परिपक्वता जब समाज में व्याप्त हो जाती है तो असामूहिक लोगों को भी सामूहिकता में संगठित करती है। सामूहिकता में पूरे विश्व समाज को एक परिवार बना देने की योग्यता है, जिसका स्वप्न सुकरात ने 'मानव–जाति' के रूप में देखा था।

ईसा मसीह के शान्ति उपदेश को लिखते हुए उनके शिष्य जॉन ने भी ऐसा ही स्वप्न देखा: ' और तब मानव पुत्र सच्चे भाइयों सम हो जाएंगे, एक दूसरे को प्रेम करेंगे, वो प्रेम जो उन्हें अपने परम पिता और धरा माँ (Heavenly Father Earthly Mother) से प्राप्त हुआ है और वे सब परस्पर सुख प्रदायक (Comforters) बन जाएंगे। और तब पृथ्वी से सभी बुराईयाँ सभी दुख लुप्त हो जाएंगे और पृथ्वी पर प्रेम एवं आनन्द का साम्राज्य होगा। तब पृथ्वी स्वर्ग–सम हो जाएगी और परमात्मा के साम्राज्य का उद्गम होगा।''

इस शताब्दि के आरम्भ में महान भारतीय दृष्टा रविन्द्रनाथ टैगोर ने भी सभी धर्मों तथा सम्प्रदायों के लोगों के (पोषण) विकास का पूर्वदर्शन किया :

'' आर्यो और अनार्यो आओ,
हिन्दू और मुसलमान,
अंग्रेज तथा इसाईयो आओ,
आओ, हे ब्राह्मण,
अपने मस्तिष्क को शुद्ध कर
पकड़ लो हाथ सबके।
आओ हे दलित लोगो,
हो जाने दो लुप्त
बोझ अपने अपमान का।
मत करो देर,
आ जाओ सभी,
भारत के तट पर,
एकत्र हुए जहाँ सभी धर्मों के लोग,
अभिषेक माँ का करने के लिए।''

# अध्याय–4
# चतुर्थ आयाम का दृष्टि क्षेत्र

चतुर्थ आयाम नक्षत्रीय प्रणाली की तरह से जटिल आकाश गंगाओं के तन्त्र का संघटन करता है। अन्त: स्थित लघु ब्रह्माण्ड को प्रतिबिम्बित करता है। संभवत: एक दिन वैज्ञानिक जान जाएंगे कि वे कितने समरूप हैं और परस्पर किस प्रकार प्रभावित करते हैं। क्षण भर के लिए आइए हम अपने अध्ययन को ये देखने के लिए सीमित करें कि किस प्रकार नक्षत्र प्रणाली हमारे अन्दर कार्य करती है और किस प्रकार नक्षत्र परस्पर सम्बन्धित हैं तथा हमारे व्यक्तिगत, सामूहिक एवं नक्षत्रीय विकास का निर्णय करते हैं?

मुख्यत: सात केन्द्र हैं जिन्हें चक्र या पहिए भी कहते हैं। ये भिन्न बिन्दुओं पर मध्य मार्ग का छेदन करते हैं। इन्हें चक्र इसलिए कहा जाता है क्योंकि ये क्षितिजीय तल पर एक विशेष आवृत्ति (Frequency) पर सीधे चक्कर में घूम रहे हैं। इस प्रकार घूमते हुए ये लाखों चैतन्य लहरियाँ प्रसारित करते हैं और मानव शरीर के अवयवों का तथा भौतिक शरीर में तदनुरूपी क्षेत्र की स्नायु अन्त:स्त्रावी प्रणाली (Neuroendocrine System) पर अपने को प्रकट करते हैं। हर केन्द्र की धुरी का सम्बन्ध हमारी चेतना से है। इसलिए हर केन्द्र क्रियाओं तथा प्रतिक्रियाओं के प्रति अत्यन्त संवेदनशील है। हमारी मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक गतिविधियाँ इन केन्द्रों पर अंकित हो जाती हैं। इन गतिविधियों का प्रभाव अच्छा या बुरा (Negative or Positive) हो सकता है। नकारात्मक प्रभाव या गैर जिम्मेदाराना आचरण केन्द्र को दुर्बल करता है जबकि सकारात्मक प्रभाव इसे शक्ति प्रदान करता है। केन्द्र का दुर्बल होना इसमें रोग तथा गलत ढंग से कार्य करने की सम्भावना को बढ़ा देता है। केवल इतना ही नहीं, ये चक्र बाह्य तत्वों के प्रति भी संवेदनशील हैं, जिसे अन्य लोग, मित्र, सम्बन्धी परिस्थिति विज्ञान (Ecology) प्रदूषण तथा प्रकृति की अन्य शक्तियाँ। जिस तरह से शरीर किसी मित्र से जुकाम के विषाणु ग्रहण कर लेता है उसी प्रकार हृदय के दर्द को भी ग्रहण कर सकता है। शारीरिक सामीप्य आवश्यक नहीं है। भावनात्मक लिप्सा (Emotional Attachment) काफी है।

चक्र जिस प्रकार चैतन्य लहरियाँ प्रसारित करते हैं वैसे ही अन्य लोगों और बाह्य शक्तियों को आत्मसात भी करते हैं।

कुण्डलिनी जागरण से पूर्व प्राय: हमारी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं द्वारा दिए गए झटकों और आघातों के परिणामस्वरूप हमारे चक्र अवरोधित होते हैं– बन्द होते हैं। हर चक्र एक विशेष कार्य करता है और हमारे चेतन या अचेतन आचरण आदर्श इसके स्वास्थ्य के लिए हानिकर हो सकते हैं। उदाहरण के रूप में यौन दुराचार के कारण पहला चक्र (मूलाधार) अवरोधित हो सकता है, शराब से दूसरा (स्वाधिष्ठान), मानसिक तनावों से तीसरा (नाभि), भावात्मक अभिघातों (सद्मों) से चौथा (हृदय), दोष भाव से पाँचवां (विशुद्धि) और क्षमा न कर पाने से छठा (आज्ञा) चक्र।

एक व्यक्ति या मेजबां, संचारक के इन अवरोधों को दर्पण की तरह से अपने चक्र पर प्रतिबिम्बित कर सकता है। केवल इतना ही नहीं, प्राण संचारण की तरह से यह प्रतिबिम्ब स्वयं को वास्तविकता में गतिशील करना आरम्भ कर देता है।

उदाहरण के रूप में संचारक (Transmitter) के हृदय चक्र का अवरोध संचरित (Host) (मेजबां), जो कि भावनात्मक रूप से उससे लिप्त है के हृदय चक्र पर प्रतिबिम्बित हो सकता है। संचरित व्यक्ति (Host) भी इस अवरोध के कारण हुए दर्द का कष्ठ उठाएगा। संचरित (प्रभावित) व्यक्ति की कुण्डलिनी जब इस अवरोध को दूर करने के लिए संघर्ष करेगी तो संचारक का अवरोध भी संचरित के अवरोध के साथ ही दूर हो जाएगा। परन्तु यदि प्रभावित व्यक्ति (Host) समय पर समस्या को दूर करने का प्रयत्न नहीं करता तो उसका अवरोध संचारक के अवरोध की कष्टकर स्थिति में पहुँच सकता है और उसे भी वही परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

इसके अतिरिक्त प्रभावित व्यक्ति से उसके अन्य मित्र भी वो बाधा ले सकते हैं इस प्रकार यह एक से दूसरे व्यक्ति तक विषाणुओं से भी तेज गति से प्रसारित होता है और सामूहिक अवरोध बन जाता है जिसमें सभी दर्पण (साधक) एक ही प्रकार की तरेड़ (बाधा) को प्रतिबिम्बित करते हैं। वास्तव में व्यक्ति किसी भी समाज में कुछ दुर्बलताएं या विशिष्टताएं देख सकता है। यह

सामूहिक अवरोध को दर्शाती है।

दूसरी ओर सामूहिकता में कुछ सशक्त गुण भी हो सकते हैं जिनका उद्‌भव जनता के किसी चक्र विशेष के प्रमुख गुणों से होता है। कुछ विशेष राष्ट्रीय लक्षणों तथा कुछ राष्ट्रों के किसी चक्र विशेष का अधिक विकसित होना इसी कारण से है। उदाहरण के रूप में, देखा गया है कि भारतीयों का पहला चक्र (मूलाधार) दृढ़ है और अबोधिता की उत्तम संवेदना की अभिव्यक्ति करता है। इटली के लोगों में सौन्दर्य बोध अत्यन्त विकसित है, यह सशक्त द्वितीय चक्र की देन है। विश्व का ७५% कला–वैभव इटली में पाया जाता है। ये भी देखा गया है कि व्यक्ति के माध्यम से बहुत सी चीजें सामूहिकता के लिए कार्यान्वित होती है या सामूहिकता के माध्यम से व्यक्ति के लिए। उदाहरणत: प्रभावित व्यक्ति (Host) की बाधा जब घटने लगती है तो इसका प्रतिबिम्ब सामूहिक रूप से उन सभी लोगों पर प्रभाव डालने लगता है जिन्होंने वह बाधा ग्रहण कर ली थी। उनकी बाधा भी घटने लगती है और अचानक पूर्ण अवरोध ही पृथ्वी से लुप्त हो जाता है।

अर्सुला डोरिंग (Ursula Doring) जो पन्द्रह से भी अधिक वर्षों से उत्तरी कैलिफोर्निया में सहजयोग ध्यान धारणा कर रहे हैं, ऐसे ही एक अनुभव का स्मरण करते हुए कहते हैं :

''एक शाम श्री माताजी ने मेरे चक्रों की बाधाओं को दूर करने के लिए मुझ पर ढाई घण्टे कार्य किया। ऐसा करते हुए वे मुझे बताती रहीं कि मैं स्वयं को दोषी न मानूं। ऐसा लगता था कि उनकी व्यक्तिगत कृपा पाने के लिए बहुत से लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे और पूरी कोशिश के बावजूद भी उनका इतना बहुमूल्य समय ले लेने के लिए मैं दोष भाव से बच न पा रहा था। कई बार तो मैंने रेंग कर निकल जाने की कोशिश भी की। एक बार तो उन्होंने मुझे घुमा कर कहा, 'स्वयं को गिनीपिग (कमाऊपूत) समझो। याद रखो यदि यह तुम्हारे पर कार्यान्वित हो जाएगा तो सामूहिकता के स्तर पर भी कार्यान्वित होगा; तुम्हारे जैसी बाधा वाले सभी लोगों को इसका लाभ हो जाएगा। अत: स्वयं को दोषी मत मानो। ऐसा करने से चैतन्य लहरियों का प्रवाह रुक जाएगा।''

अत: यह समझ लेना संभव है कि परमाणु बम की विध्वंसक शक्ति के

मुकाबले अन्त:स्थित शाश्वत शक्ति की शक्ति कितनी महान है।

पर्यावरण की समस्या भी चक्रों पर प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के रूप में शहरों में गैस की भभक का गहन प्रदूषण जनता के ग्रीवा केन्द्र (Throat Centre) को सामूहिक रूप से अवरोधित करता है। इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि कैसे हम नकारात्मक सामूहिक आदर्शों के शिकार हो जाते हैं। सहस्राब्दि की दहलीज पर यह स्पष्ट हो गया है कि मानव स्वास्थ्य अब अधिक से अधिक सामूहिक आचारों की कृपा दृष्टि पर निर्भर करेगा। इसलिए इन पर नियंत्रण रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हमारी नदियों, जीवमण्डल (Biosphere) और समुद्रों का प्रदूषण हमारे धमनीजाल, आकाशगंगाओं (Galaxies) एवं अन्त:स्थित सागरों पर दुष्प्रभाव डालेगा। बाह्य स्थिति केवल अन्त:स्थिति का विस्तार मात्र है। शास्त्रों में कहा है, यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे। जिस पृथ्वी ग्रह पर हम रहते हैं यह बहुत संकुचित हो चुका है। इण्डोनेशिया जैसे दूरस्थ स्थान के जंगलों की आग ने दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों के लाखों लोगों के विशुद्धि चक्र पर कुप्रभाव डाला। शताब्दि परिवर्तन के समय हमने ये महसूस कर लिया है कि अपने चक्रों के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए हमें अन्य लोगों के स्वास्थ्य को भी बनाकर रखना होगा। संभवत: यह ईसा के कहे हुए सत्य से अधिक दूर नहीं है। ईसा ने कहा था, 'अपने पड़ोसी को प्रेम करो।'

सम्बन्ध, मानव के व्यक्तिगत विवेक और धरा विवेक को पूर्ण नक्षत्रीय विवेक में संघटित करते हैं और तब इसका विश्व–व्यापी या ब्रह्माण्डीय विवेक में संघटित होना आवश्यक है।

आइंस्टाइन ने अपनी खोजों का श्रेय सर्वव्यापी विवेक (Cosmic Mind) को दिया। ७८ वर्ष पूर्व उन्होंने पता लगाया कि अत्यन्त शीत स्थिति में बोज़ों (Bosons) के कण अविभेद्य (एक से) हो जाते हैं। एक दूसरे में विलय होकर वे अपनी व्यक्तिगत पहचान पूर्णत: खो देते हैं। आइंस्टाइन ने कहा था कि ''परिणाम के रूप में ऐसा घटित हो सकता है परन्तु केवल अविश्वसनीय ठण्डे तापमान में। एक बार इतने निम्न तापमान तक चले जाने पर यह केवल परमात्मा के मस्तिष्क में जीवित रह सकते हैं। ''

पाँच जून १९९५ को प्रयोगशाला में ये हास्यास्पद निम्न तापमान प्राप्त कर

लिए गए और आइन्सटाइन की भविष्यवाणी सत्य साबित हुई। अणुओं से लेकर नक्षत्रों तक सभी भौतिक पदार्थों का तरंगदैर्घ्य (Wavelengths) इतना छोटा होता है कि ये स्पष्ट सीमाओं, स्थानों तथा गतिक्षमता से व्यवहार करने लगते हैं परन्तु इनमें से उष्ण एवं तीव्रतम अणु वाष्पीकृत होने लगते हैं।

अंग छादन (Overlap) की सीमा तक कणों के तरंगदैर्घ्य का विकास ही इनके परिवर्तन की कुंजी है। और यह विकास अति शीतलन के परिणामस्वरूप ही घटित होता है। अणुओं के बादल अतिशीतल अवस्था में पहुँचकर अपनी व्यक्तिगत पहचान खोकर विलय हो जाते हैं वे एक दूसरे सम नहीं होते परन्तु वे एकरूप होते हैं। उदाहरण के रूप में उस स्थिति की आप कल्पना कीजिए जिसमें एक दर्जन अण्डे गत्ते के डिब्बे में अपने खाँचों में बिना टूटे या बिना एक–दूसरे में दखलन्दाजी किए परस्पर व्याप्त (Overlap) हो जाएं!

बोस–आइंस्टाइन की घनीकरण अवस्था (Condensate State) की खोज इस तथ्य को स्पष्ट करने में सहायक है कि चेतना के एक विशिष्ट स्तर पर व्यक्तिगत मानव विवेक धरा विवेक तथा नक्षत्रीय विवेक अंतरिक्षीय विवेक में संघटित (एक रूप) हो जाते हैं या दूसरे शब्दों में, प्रारम्भ से ही ये अन्तरिक्षीय विवेक में संघटित (एक रूप) हो जाते हैं या दूसरे शब्दों में, प्रारम्भ से ही ये अन्तरिक्षीय विवेक के प्रतिबिम्ब हैं।

अत: ये माना जा सकता है कि व्यक्तिगत मस्तिष्क एवं नक्षत्रीय प्रणाली एक दूसरे को प्रभावित करते हैं तथा इन पर अंतरिक्षीय मस्तिष्क का प्रभाव पड़ता है, तथा हर व्यक्ति के मस्तिष्क का प्रभाव दूसरे पर पड़ता है और दोनों परस्पर प्रभावित करते हैं। नकारात्मक प्रभाव शारीरिक, भावात्मक या मानसिक विकारों को अभिव्यक्त करते हैं।

अत: मानव में जैविक, मानसिक, भावात्मक और सांस्कृतिक सम्बन्ध सामूहिक प्रक्रिया से अलग नहीं किए जा सकते। यह सहजयोग सामूहिक ध्यान धारणा द्वारा सत्यापित हो चुका है। प्राय: व्यक्तिगत बाधा या समस्या सामूहिकता की चैतन्य शक्ति से समाप्त हो जाती है। साधक चाहे अकेला भी ध्यान करे परन्तु सामूहिक ध्यान धारणा से उसे अधिक लाभ होता है। इसलिए व्यक्ति के उत्थान के लिए सामूहिकता आवश्यक है।

कोई भी अवयव यदि केवल अपने ही अस्तित्व के विषय में सोचता है तो वह निश्चित रूप से अपने वातावरण को नष्ट करेगा और अन्ततः स्वयं को भी। शरीर के अन्दर कोई भी कोशिका अकेली नहीं पनपती, पूरा शरीर बढ़ता है। इस प्रकर जीवित इकाई अपने आप में पूर्ण (Entity) नहीं है, यह तो वातावरण से पारस्परिक सम्बन्धों ४ शरीर द्वारा अपनाए गए शरीर के संगठन आदर्श (Pattern of Organisation) हैं। अपनी सामूहिकता तथा वातावरण में जीवित तो पूर्ण शरीर (संगठन) रहता है।

विकसित दृष्टि के प्रकाश में सामूहिक आदर्शों को नष्ट करने वाले संवेदनशील नकारात्मक प्रतिमानों (Need Patterns) से, जो कि शनैः शनैः परन्तु निश्चित रूप से रेंगते हुए घुसते आ रहे हैं, सावधान रहना आवश्यक है। सामूहिकता के हित में इन अनर्थ कर प्रयत्नों का पर्दाफ़ाश करना और इनका विरोध करना बहुत महत्वपूर्ण है।

अकर्मण्य होकर व्यक्ति यदि नकारात्मकता को स्वीकार करता है जो निश्चित रूप से अपने विनाश को आमंत्रित करता है, क्योंकि नकारात्मकता कैंसर की तरह से पनपती है। दूसरी ओर हमारे अन्दर जागृत हुई परिवर्तनात्मक शक्ति हमें उत्थान प्राप्ति में सफलता प्राप्त करने की योग्यता प्रदान करती है और हमें विवेक प्राप्त करने तथा अपने चरित्र की दुर्बलताओं को सुधारने के योग्य बनाती है।

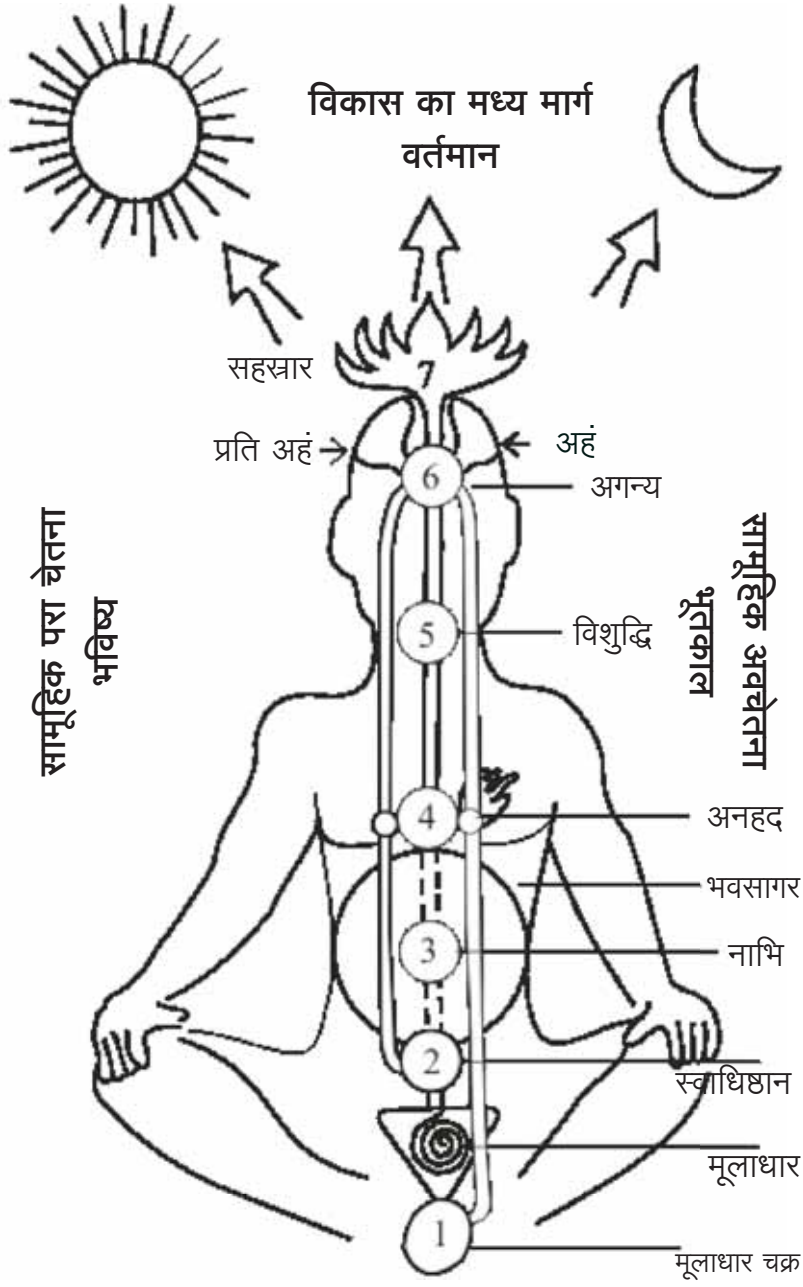
विकास का मध्य मार्ग
वर्तमान
सहस्रार
प्रति अहं
अहं
अगन्य
विशुद्धि
अनहद
भवसागर
नाभि
स्वाधिष्ठान
मूलाधार
मूलाधार चक्र
सामूहिक परा चेतना
भविष्य
सामूहिक अवचेतना
भूतकाल

# अध्याय–5
# हमारी अन्तर्जात पावित्र्य दृष्टि

बच्चे को गले से लगाए माँ की मूर्ति मानव चेतना पटल पर खुदी सर्ववांछित मूर्ति है। प्राचीन परम्पराओं में कुमारी मेरी (Madoma) की पूजा के रूप में यह शुद्ध इच्छा व्यक्त हुई। कुमारी मेरी के अनुयायियों ने उन्हें नर त्रिदेवों से कहीं ऊँचे आध्यात्मिक आसन पर बिठाया। आज भी कुमारी मेरी की पूजा बहुत सी संस्कृतियों में की जाती है विशेषकर हिस्पेनिक (Hispanic) और कैथोलिक परम्पराओं तथा कुछ नारीवादी इसाईयों में। परन्तु अब भी कुछ प्रोटेस्टेंट (Protestent) इसाई इसे अच्छा नहीं मानते।

'' यद्यपि नवजात शिशु का शरीर
जन्म लेता है माँ की कोख से
बताता हूँ मैं सत्य तुम्हें
धरा माँ से तुम एक रूप हो
तुम उसमें हो और वो तुममें है
उन्हीं से तुम उत्पन्न हुई
उन्हीं में जीवित हो तुम। '' (ईसा मसीह का एसने उपदेश)

परन्तु पाँच हजार वर्ष ई.पू.से पूर्व भी प्राचीन भारतीय सभ्यता अबोध शिशु को उठाए माँ का सम्मान करती थी। उनके सम्बन्धों की अबोधिता का उद्गम सामूहिक अचेतना से है और आदि माँ के अपने बच्चों के प्रति प्रेम को प्रतिबिम्बित करता है। ऐसा लगता है कि जीवन का अर्थ परम पावनी माँ के प्रेम एवं शिशु की अबोधिता के प्रतीक के रूप में निहित है और यह स्पष्ट करता है कि प्रेम परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति है जो अबोधिता (पावित्र्य) के माध्यम से प्रवाहित होती है। सृष्टा के प्रेम एवं सौन्दर्य को प्रतिबिम्बित करने के लिए मानव माध्यमों का पवित्र होना आवश्यक है। अपनी अबोधिता के कारण प्रकृति एवं पशु सदैव परमात्मा के अनुरूप चलते हैं।

मानव में अबोधिता का गुण रीढ़ के सिरे पर धरा केन्द्र (मूलाधार) नामक चक्र में स्थापित है। यह एक अन्तर्जात गुण है जो नष्ट नहीं हो सकता। इस पर

सदैव आक्रमण होता रहा परन्तु इसका दमन नहीं हो सकता क्योंकि परमात्मा द्वारा हमारे सृजन के आरम्भ से ही इसकी दृढ़ता अन्तर्रचित है। इसकी अन्त: शक्ति अनन्त है और इसे पृथ्वी में डाले गए अंकुरित होने वाले नन्हें से बीज में देखा जा सकता है। पृथ्वी इसकी माँ है और वह अपने शिशु का पोषण करती है। इसी प्रकार अपने अबोधिता के गुण के कारण हम अपनी सृजनहार आदि माँ के दिव्य प्रेम से सिंचित हैं। परन्तु यदि हमारा पावित्र्य रूपी दर्पण अन्य चीज़ों से ढ़का हुआ होगा तो हम उनके प्रेम की शक्ति को महसूस नहीं कर सकते। जीवन यात्रा में अज्ञानता की अनगिनत तहें इस दर्पण को ढ़क लेती हैं और दर्पण में हमें मिथ्या आकृतियाँ दिखाई पड़ती हैं। फिर भी अबोधिता का गुण कभी समाप्त नहीं होता। दर्पण को साफ करने का भी उपाय है ताकि यह सच्चाई को प्रतिबिम्बित कर सके।

अबोधिता मानव का अन्तर्जात गुण है यह हमें सहारा, पथ प्रदर्शन एवं सुरक्षा–प्रदान करता है। उदाहरण के रूप में कोई बाह्य चीज़ यदि हमारे अन्दर प्रवेश करने का प्रयत्न करती है तो हमारी अबोधिता शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को सावधान करती है और वह एक दम गतिशील हो उठती है। चेतना के बिना मानव शरीर निस्सहाय हो जाएगा। दर्पण जितना स्वच्छ होगा उतनी तेजी से प्रतिबिम्बित करेगा। इसी प्रकार जब हम जाने अन्जाने अपनी आत्मा के विरोध में कार्य करते हैं तो अबोधिता खतरे की घण्टी बजा देती है। यदि हम इसकी उपेक्षा करें तो कुछ झटकों के पश्चात् यह शीत–क्रोध में दब जाती है और परिणामस्वरूप प्रथम चक्र जड़वत हो जाता है। उदाहरण के रूप में बलात्कार के मामले में जब एक सती के पावित्र्य को चुनौती मिलती है तो ज़ख्मी पावित्र्य का आघात उसके मानसिक असन्तुलन का कारण बन सकता है। उसकी अबोधिता के लिए ये अपमान इतना बड़ा है कि इसे सहा नहीं जा सकता। जब हम अबोधिता के मूल्य (महत्व) के प्रति जागरूक हो जाते हैं केवल तभी हम अपना और अन्य लोगों का सम्मान कर सकते हैं। इस चेतना के बिना नशीले पदार्थों की तरह से काम भी विषयासक्ति के लिए शारीरिक लालसा मात्र है। नशीले पदार्थ हमारी अबोधिता पर आक्रमण करते हैं और उस पर हावी होने का प्रयत्न करते हैं। नशीले पदार्थों के सेवन एवं यौन दुराचार के कारण पहला चक्र जड़वत हो जाता है और बाह्य आक्रमणों से शरीर की रक्षा करना बन्द कर देता है। ऐसी

हालत में एड्स के विषाणु (H.I.V.) शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। परन्तु सहजयोग में कुण्डलिनी जागृति और इसकी चैतन्य लहरियों द्वारा अबोधिता के स्तर को पुन: स्थापित किया जा सकता है।

काम पूर्णत: सामान्य एवं स्वाभाविक मानवीय इच्छा है परन्तु काम को उचित परिप्रेक्ष्य में समझा जाना आवश्यक है। मानव उत्थान में रति क्रिया की कोई भूमिका नहीं है। कुण्डलिनी जागरण में काम का कोई कार्य नहीं है। बहुत से तान्त्रिकों तथा रहस्यवादी लेखकों ने कुण्डलिनी को यौन ऊर्जा कहा है और इस बात पर बल दिया है कि वीर्य के पुनर्अवषोषण से कुण्डलिनी जागृत हो जाती है। शरीर रचना विज्ञान को जानने वाला हर व्यक्ति यह भली–भांति जानता है कि शारीरिक रूप से इस प्रकार का पुनर्अवषोषण (Reversal) असंभव है और फिर कुण्डलिनी का स्थान यौन अवयवों की देखभाल करने वाले प्रथम चक्र से ऊपर है। इसलिए अपने से नीचे रचे गए चक्र से कुण्डलिनी प्रभावित नहीं हो सकती। कुण्डलिनी को केवल आत्म–साक्षात्कारी व्यक्ति ही जागृत कर सकता है जिसकी कुण्डलिनी किसी अधिकारी व्यक्ति ने जागृत की हो। कोई यदि कुण्डलिनी जागृति के लिए अनाधिकार चेष्टा करे, विशेष रूप से तान्त्रिक क्रियाओं द्वारा, तो प्रथम चक्र (मूलाधार) विक्षुब्ध हो उठता है और किसी भी प्रकार के अस्वाभाविक रोगों का कारण बनता है। कुण्डलिनी जागृति तो अत्यन्त नैसर्गिक एवं आनन्दमय अनुभव है। अत: ये स्पष्ट है कि मानव के उत्थान में काम–वासना की कोई भूमिका नहीं है।

नवजात शिशु की अबोध मुस्कान हमें अपनी अबोधिता का स्मरण कराती है। बचपन से ही अबोधिता हमारी नींव है और यह हमें उत्थान के लिए सावधानी पूर्वक आवश्यक खुराक पहुँचाकर हमारा पोषण करती है। विवेक एवं सहज बुद्धि के रूप में इसकी अभिव्यक्ति होती है। हाबर्ड और बरकलेस (Berkeleys) हमें अपने पेशे में सफल होना सिखा सकते हैं परन्तु विवेक की शिक्षा नहीं दे सकते। परन्तु सर्वसाधारण किसान, जो पृथ्वी के सानिध्य में रहते हैं, नैसर्गिक रूप से विवेक गुण सम्पन्न हैं।

ओल्ड टेस्टामेन्ट अपो क्राइफल सोलोमन की विवेकशीलता के पाँचवे अध्याय में वर्णन है :

''विवेक का वास्तविक आरम्भ सीखने की इच्छा से होता है, और सीखने की चिन्ता का अर्थ है उसके प्रति प्रेम; उसके प्रेम करने का अर्थ है उसके नियमों का पालन करना; उसके नियमों का पालन अमरत्व का परवाना (अधिपत्र) है; और अमरत्व (immorality) मनुष्य को परमात्मा के समीप ले आता है। इस प्रकार विवेक की इच्छा शाही बुलन्दी (Kingly Stature) तक पहुँचा देती है .....''

''..... क्योंकि विवेकशीलता में बुद्धिमान एवं पावन आत्मा है, अपने आपमें अद्वितीय फिर भी बहुत से तत्वों से बनी हुई, सूक्ष्म उन्मुक्त प्रेम करने वाली सुबुद्ध, बेदाग, स्पष्ट, अभेद्य, अच्छाई को प्रेम करने वाली, उत्सुक, अवांछित, हितैषी, मानव के प्रति करुणामय, स्थिर, त्रुटिहीन, चिन्तामुक्त, सर्वशक्तिमान, सर्वेक्षण करने वाली, व्याप्त, विवेकमय, पान और मृदु आत्माएं। क्योंकि विवेकशीलता गतिशक्ति से भी अधिक सुगमता से गतिशील होती है और अपनी पावनता के कारण हर चीज़ में प्रवेश कर जाती है व्याप्त हो जाती है। सुहावने कोहरे की तरह परमात्मा की शक्ति से वह निकलती है, सर्वशक्तिमान की महिमा की पावन निस्सरण की तरह; चोरी से भी कोई दूषित चीज़ इसमें नहीं घुस सकती। यह शाश्वत प्रकाश से विकीर्णित होने वाली ज्योति है, परमात्मा की गतिशील शक्ति का निर्मल दर्पण और परमात्मा की श्रेष्ठता का प्रतिबिम्ब। एकमात्र होते हुए भी यह सभी कुछ कर सकती है; स्वयं कभी परिवर्तित नहीं होती फिर भी सभी नई चीज़ों का सृजन करती है; युगों–युगों से पावन आत्माओं में प्रवेश करके उन्हें परमात्मा के मित्र तथा पैगम्बर बनाती है, क्योंकि परमात्मा विवेकशीलता को अपना आधार बनाने वाले लोगों के अतिरिक्त किसी को स्वीकार नहीं करते। वह सूर्य से भी अधिक प्रकाशवान है, और सभी तारामण्डलों से उत्तम है; दिन के प्रकाश से जब उसकी तुलना करते हैं तो वह उससे भी श्रेष्ठ है; क्योंकि दिन रात्रि को स्थान देता है परन्तु विवेकशीलता के सम्मुख कोई भी दुष्टता प्रबल नहीं हो सकती। शक्ति से वह पूरे विश्व को एक सिरे से दूसरे सिरे तक नाप लेती है और सदयता पूर्वक सभी चीज़ों की आज्ञा देती है।

प्रथम चक्र पृथ्वी तत्व से बना है परन्तु पृथ्वी को जीवन्त रचना माना जाता है। माँ की शक्ति को लोग हजारों वर्षों से जानते हैं और जनन क्षमता

प्रदायक के रूप में इसकी पूजा होती रही है। आस्ट्रेलिया के उलूरू (Uluru) नामक स्थान के मूल निवासियों की पौराणिक कथाएं मातृ शक्ति का वर्णन इस प्रकार करती हैं: 'समय के आरम्भ से पृथ्वी माँ ने हर चीज़ को जीवन प्रदान किया है वही मूल शक्ति है जिनसे मानव और पशु उत्पन्न होते हैं और बढ़ते हैं।'

आइए, प्रकृति के तालमेल में, इसके विरूद्ध नहीं, कार्य करने के लिए अपनी एक मात्र पृथ्वी का सम्मान करें तथा उसके सभी चमत्कारों, वनस्पति, जीव–जन्तुओं, वायु, जल और भूमि आदि को सुरक्षित रखने की विवेकशीलता प्राप्त करें।

एसनीस के उपदेश में (The Gosspel of the Essenes) ईसा कहतें हैं:

''हमारा सातवां सम्पर्क पृथ्वी माँ से है, वे, जो मानव के मूल का पथ–प्रदर्शन करके उन्हें आशीर्वादित भूमि की गहनता में भेजने के लिए अपने देवदूत भेजती है। हम पृथ्वी माँ का आह्वान करते है! पावन रक्षक; भरण–पोषण करने वाली वे ही विश्व को पुनर्स्थापित करेंगी। पृथ्वी उन्हीं की है, और विश्व की पूर्णता भी, तथा पृथ्वी पर रहने वाले जीव भी। हम उस सुन्दर, सशक्त, हितैषी पृथ्वी माँ की तथा उनके उदार, शूरवीर और शक्तिशाली देवदूतों की पूजा करते हैं .....।''

विकास के प्रथम चरण में पहले एक कोशिका संस्थान (Single Cell Organism) की रचना अमीबा (जीवाणु) की तरह से की गई। तत्पश्चात् यह अधिकाधिक जटिल होता गया और बहु कोशिकीय संस्था बन गया। यह पृथ्वी तत्व से बना था और यह जीवन का आरम्भ था। जागृत होने पर इसकी चुम्बकीय शक्ति कार्य करने लगी। माँ का गुरुत्वाकर्षण हमें दिशाओं का अन्तर्विवेक प्रदान करता है जो ऊपर के चक्रों को आश्रय एवं स्थापन प्रदान करता है।

भविष्य में विश्व–समाज की स्थापना अबोधिता की दृष्टि के आधार पर होगी। बृद्धि की सहजता में अबोधिता अभिव्यक्त होती है। लोग जब सहज होते हैं तो वे छल छद्म नहीं करते, आनन्दमय पारिवारिक जीवन में परिपक्व होने वाले निष्ठावान चिरकालिक सम्बन्धों में ये सन्तोष प्राप्त करते हैं। एक स्वस्थ परिवार आनन्दमय एवं शान्त समाज की सृष्टि में सकारात्मक भूमिका निभाता

है। इसके विपरीत शारीरिक अस्थायी सम्बन्ध अत्यन्त उत्तेजित करने वाले तो हो सकते हैं परन्तु ये असुरक्षा एवं भावनात्मक तनावों की ओर ले जाते हैं। असुरक्षा एवं अविश्वास की अन्तर्धारा (निहीत भावना) सम्बन्धों को पूर्ण नहीं होने देती। अबोधिता के सन्तोष के बिना व्यक्ति और अधिक पाने के लिए तड़पता रहता है और वह 'अधिक' कभी 'काफी' नहीं होता। सदैव कोई अन्य 'अधिक' आकर्षक, 'अधिक' 'नापसन्द होता है। आँखों में जब पावित्र्य का प्रकाश धुंधला हो जाता है तो व्यक्ति विपरीत लिंगी लोगों को अपवित्र दृष्टि से देखता है। आगामी सहस्राब्दि स्थायी सम्बन्धों की परिकल्पना करती है जो नए आध्यात्मिक समाज के विकास के लिए सुरक्षा एवं स्वस्थ परिवारों का सृजन करेंगे।

हमें अपने मूल्य के विषय में जागरूक होना है और अपना वास्तविक पद ग्रहण करना है। ये घटना सामूहिक होनी चाहिए। एक या दो व्यक्ति पूरे समाज को परिवर्तित नहीं कर सकते। प्राचीन काल में कोई महान सन्त अपने कुछ शिष्यों को परिवर्तित कर लेता था परन्तु इससे समाज परिवर्तित नहीं होता। अब माताजी श्री निर्मलादेवी के अवतरण से बसन्त काल आ गया और अब विश्व–भर में सामूहिक आत्मसाक्षात्कार देना सम्भव है। जैसा दो हजार वर्ष पूर्व महान भारतीय ज्योतिषविद् भृगु ऋषि ने पूर्वचिन्तन किया था, यह प्रक्रिया चुपके–चुपके पूरे समाज को परिवर्तित कर रही है।

फलित ज्योतिष के सूक्ष्मदर्शी प्राचीन विद्वानों में भृगु ऋषि सर्वोच्च हैं। दो हजार से भी अधिक वर्ष पूर्व वे पृथ्वी पर अवतरित हुए। उनका महान ग्रंथ–नाड़ी ग्रन्थ, जो कमल के पत्तों पर लिखा गया है, मानव की कुण्डली, उसके जन्म के समय सितारों के संयोग एवं क्रम परिर्वतन तथा आध्यात्मिक महत्व की भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का क्रम से वर्णन करता है। तीन सौ वर्ष पूर्व भूजेन्द्र ने मराठी में इसका सम्पादन किया। नाड़ी ग्रंथ के अनुसार :

'जब बृहस्पति मीन राशि में होगा तो पृथ्वी पर एक महान योगी अवतरित होंगे। १९७० तक बहुत से लोगों को स्पष्ट हो चुका होगा कि नवयुग आरम्भ हो चुका है। कलियुग समाप्त हो जाएगा और कृत युग (परिवर्तन युग) आरम्भ होगा। पृथ्वी संकुचित हो जाएगी और पृथ्वी का प्रभाव क्षेत्र सूर्य के समीप आ जाएगा। मानव जीवन में पूर्ण क्रान्ति आ जाएगी। इस समय पर एक महान योगी अवतरित

होंगे।

इस समय से पूर्व योगी या साधक तपस्या, ज्ञान और पातांजल योग द्वारा मोक्ष का आनन्द प्राप्त करके जीवन का परम अर्थ जान सकेंगे। परन्तु इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए अपने शरीर के अन्दर स्थित चक्रों की सुप्त शक्ति को जगाने के लिए उसे कठोर तपस्या करनी होगी, तब कहीं अन्त में उसकी कुण्डलिनी शक्ति जागृत होगी।

इस महान योगी द्वारा आविष्कार की गई नई विधि द्वारा मानव एक ही जीवन काल में मोक्ष का आनन्द प्राप्त कर सकेगा। मोक्ष प्राप्ति के लिए अब मनुष्य को न मरने की आवश्यकता होगी और न जीवन का बलिदान करने की। जिस ब्रह्मानन्द को अभी तक केवल महान सन्त ही अनुभव कर सकते थे और वो भी मृत्यु के समय समाधि ग्रहण करके, इस स्थिति को इस नए योग द्वारा सर्वसाधारण मानव जीवन काल में ही प्राप्त कर सकेगा, मृत्यु के समय समाधि की अवस्था में जाना इसके लिए आवश्यक न होगा।

आरम्भ में लाखों में से कोई एक व्यक्ति ही इस योग और मोक्ष को पा सकेगा। परन्तु कुछ समय पश्चात् पूरी मानव जाति इस योग की सहायता से मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकेगी। लोगों को रोटी, कपड़ा और मकान की चिन्ता न करनी पड़ेगी। सर्वसाधारण जीवन व्यतीत करते हुए लोग योग (परमात्मा से एकाकारिता) प्राप्त करेंगे। अस्पतालों की कोई आवश्यकता न रहेगी क्योंकि बीमारियाँ ही न होंगी। आरम्भ में वह महान योगी मात्र छूकर रोग मुक्त कर देंगे। शरीर को नष्ट करने वाला बुढ़ापा समाप्त हो जाएगा और लोगों के शरीर स्वर्गीय होंगे।

नए वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण विज्ञान और धर्म एकरूप हो जाएंगे। विज्ञान की सहायता से परमात्मा और आत्मा के अस्तित्व को प्रमाणित किया जा सकेगा। अज्ञान एवं माया का पर्दा हट जाएगा और अब मानव के लिए ब्रह्मानन्द एवं मोक्ष, जिसे कठोर तपस्या और परिश्रम द्वारा केवल योगी ही प्राप्त कर सकते थे, प्राप्त करना सुगम हो जाएगा।'

माताजी श्री निर्मला देवी के कार्यों से ये सब भाविष्यवाणियाँ सत्य हो गई हैं। भौगोलिक रूप से भारत के मध्य में स्थित छिंदवाड़ा नामक एक पर्वतीय

स्थान पर भरी दोपहर मे इक्कीस मार्च १९२३ को वासन्तिक विपु (Spring Equinx) के दिन, जब रात और दिन बराबर होते हैं उन्होंने जन्म लिया। ५ मई १९७० को श्री माताजी ने सहजयोग विधि का परिचय कराया जिसके द्वारा बिना किसी प्रयत्न, तपस्या, कष्ट या व्रत आदि के इच्छाओं का शमन करके जीवन्त मृत्यु की स्थिति में रहने की तो बात ही नहीं है आत्म साक्षात्कार प्राप्त किया जा सकता है। जैसे पहले बताया गया है साक्षी अवस्था के रूप में आत्मा अपनी अभिव्यक्ति करती है और निर्लिप्सा के माध्यम से व्यक्ति अपनी क्षुधा (भूख) पर विजय प्राप्त कर लेता है।

पवित्र अस्थि में कुण्डलित कुण्डलिनी को जब श्री माताजी जागृत करती हैं तो हजारों लोगों में उठती हुई कुण्डलिनी को भिन्न चक्रों पर धड़कते हुए देखा है।

सी.जे.युंग (C.J.Yung) ने 'सामूहिक अचेतन' (Collective Unconscious) की बात की, जो सभी मनुष्यों में होता है। इसका ज्ञान उन्हें स्वयं अपने तथा अपने रोगियों के स्वप्नों तथा अन्तर्दृष्टि के माध्यम से प्राप्त हुआ। वे जानते थे और उन्होंने शिक्षा भी दी कि सामूहिक साम्राज्य की इस नवचेतना का उदय केवल आत्म–साक्षात्कार की परिपक्व करने वाली प्रक्रिया से, सामूहिक वास्तविकता को छुपाने वाली और सामूहिक चेतना की अनुभूति के मार्ग में बाधा बनने वाले भ्रम एवं कल्पनाओं का त्याग करने से प्राप्त किया जा सकता है। लोगों के समूह, समाज और संस्कृति का सामूहिक मस्तिष्क (Collective Mind) या सामूहिक मनस (Collective Psyche) में सामूहिक अचेतन (Collective Unconscious) भी सम्मिलित है। व्यक्तिगत रूप से हम इन सामूहिक आदर्शों (Collective Patterns) में लिप्त होते हैं और इनसे प्रभावित होते हैं और कुछ सीमा तक इनका निर्माण भी करते हैं।

चाहे भिन्न स्रोतों से प्राप्त की हुई नकारात्मकता के कारण चक्र बिगड़ गए हों परन्तु हमारी कुण्डलिनी की प्रेममय चैतन्य–लहरियाँ उन्हें स्वस्थ कर देती हैं। वे हमारी अपनी (व्यक्तिगत) माँ हैं जो आदि माँ (Primordial Mother) का प्रतिबिम्ब हैं–आदि माँ जिनकी प्रेम की शक्ति अजेय है। चक्र जितना भी बिगड़ा हुआ हो हमारी कुण्डलिनी इसका पोषण करती है और उसे स्वस्थ करती है। इस प्रकार सम्बन्धित चक्र के स्वस्थ हो जाने पर हमारे शरीर से रोग दूर हो

जाते हैं।

अन्दर और बाहर हर चक्र प्रकृति के मूल नियमों का प्रतीक हैं। प्रकृति के नियमों का किसी प्रकार का खण्डन तुरन्त चक्र पर प्रतिबिम्बित होता है और उंगलियों के सिरों पर तपन या चुभन के रूप में अभिव्यक्त होता है। इस प्रकार, बीज से सितारों तक, अणु से नक्षत्र मण्डल तक, लघु ब्रह्माण्ड से बृहद ब्रह्माण्ड तक सृष्टि के पीछे विद्यमान शक्ति को अनुभव कर पाना सम्भव है। ज्यों ज्यों श्रद्धा (Recognition) स्थापित होती है, सद्–सद् विवेक प्राप्त हो जाता है। ये केवल काले–सफेद में अन्तर करने का तुच्छ विवेक नहीं है, यह तो जीवन के श्रेष्ठ गुणों को अनावृत (स्पष्ट) करने की कुँजी है। इस प्रकार से हम अपने मानसिक बन्धनों से मुक्त होकर जीवन को सर्वव्यापक प्रकाश में देखने लगते हैं।

# अध्याय–6
# भ्रम एवं कपट

ज़ैन सन्तों (Zen Masters) और भारतीय दृष्टाओं ने पृथ्वी पर जीवन को नश्वर रूप में देखा। हर चीज़ परिवर्तनशील है, कुछ भी स्थायी नहीं है, हम भी इसी परिवर्तन का एक भाग हैं बाएं और दाएं आयामों से ज्यों ही हमारा चित्त इधर–उधर होता है, हमारी आचरण शैली भी परिवर्तित हो जाती है। उदाहरण के रूप में प्रात: काल एक व्यक्ति गम्भीर हो सकता है, दोपहर को तनाव ग्रस्त और संध्या तक अत्यन्त क्रुद्ध। हमारे अन्त: स्थित दूसरे चक्र (स्वाधिष्ठान) के दाईं ओर वायु दाब मापक यन्त्र (Barometer) बना है जो हमारी मन:स्थिति का प्रबोधक है, मन:स्थितियों पर दृष्टि रखता है, इसे जिगर (Liver) कहते हैं। सामान्यत: जिग़र हमारी शरीरिक एवं मानसिक गतिविधियों के द्वारा उत्पन्न हुई गर्मी को नियंत्रित करता है। परन्तु जब व्यक्ति अतिगतिशील और उत्तेजित हो जाता है तो शरीर–तन्त्र के अन्दर उत्पन्न हुई गर्मी को जिग़र नियमित नहीं कर पाता तथा स्वयं तप जाता हैं। जिग़र उष्ण या एकदम गरम होने लगता है और परिणामत: अत्यन्त चिड़चिड़ा और क्रोधित हो जाता है। ज्यों–ज्यों इसका तापमान बढ़ता है पारा ऊपर को जाता है और व्यक्ति झल्लाने लगता है और कई बार तो अपना सन्तुलन खो बैठता है।

क्रोधित व्यक्ति के विषय में हम प्राय: कहते हैं, 'वह मुझ पर पागल हो गया है। ' वास्तव में यह अक्षरश: सत्य है। किसी पागल के आचरण तथा किसी व्यक्ति के क्रोध की विस्फोटक स्थिति में बिल्कुल भी अन्तर नहीं है। चित्त सूर्य मार्ग (दाएं अनुकम्पी) की चरम सीमा में चला जाता है और प्रचण्ड क्रोध इसका परिणाम होता है। थोड़ी सी देर में पारा नीचे आता है, व्यक्ति शान्त हो जाता हैं और क्रोध में कही हुई बाते या किए गए भयानक कार्य, जैसे किसी को चोट पहुँचाना या हत्या आदि, को भूल जाता है। क्रोध के इस दौर का परिणाम खेद, दोष–भावना या प्रचण्ड क्रोध के उस क्षण को याद न रख पाना हो सकता है। सहजयोग में जिगर को ठण्डा करके पारा सामान्य बनाए रखने के लिए बहुत सी विधियाँ है। इन विधियों से आज के समाज में नित्य में नित्य की बात बने,

पागलपन के दौरों को रोका जा सकता है।

हमारे अपने स्वभाव के अतिरिक्त मदिरा का उपयोग भी हमारे जिग़र को बहुत अधिक तपा देता है और परिणाम स्वरूप हमारे चित्त को नष्ट करता है। जिग़र हमारे चित्त का निवास स्थान है इसलिए इसके कार्यकलापों में किसी भी प्रकार की दखलन्दाजी हमारे चित्त को प्रभावित करती है। शराब के प्रभाव से जब चित्त नष्ट हो जाता है तो मानव की आचरण शैली पशुओं से भी बदतर हो जाती है।

इक्कीसवीं शताब्दि का हमारा दृष्टिकोण मानव–चेतना की परिवर्तित अवस्थाओं के मूल ज्ञान पर आधारित है। इसके द्वारा अपना चित्त आन्तरिक उत्थान पर डालकर हम चेतना की उच्चतम अवस्था प्राप्त करेंगे। अत: चित्त की किसी प्रकार की हानि हमारी चेतना के विरुद्ध कार्य करती है। ज़ैन ज्ञानियों (Zen Masters) सूफ़ी सन्तों और योगियों ने चित्त को शुद्ध करके स्थिर करने के लिए अपने पूरे जीवन लगा दिए ताकि ये सामूहिक चेतना के उच्चतम स्तर में लीन हो सकें। उन्होंने बड़े उत्साह से अपने चित्त को सभी प्रकार के विक्षेपों, शराब और नशों के प्रभाव से बचाया। हमारा चित्त परा–बैंगनी (Laser) किरणों की तरह से कार्य करता है। इसकी कार्यक्षमता स्वाभाविक रूप से इसकी स्थिरता और तीक्ष्णता पर निर्भर करती है। चित्त को शुद्ध एवं तीक्ष्ण रखने के लिए आवश्यक है कि यह वास्तविकता पर आधारित हो, बनावटी चीज़ों या भ्रमों पर नहीं। चित्त जब भ्रमों के पीछे दौड़ता है तो इसका ठगा जाना अवश्यम्भावी है। छल के निरन्तर झटके चित्त को सुस्त कर देते हैं और इसकी तीक्ष्णता एवं चुस्ती समाप्त हो सकती है। चित्त की चुस्ती ही हमारे बोध को सुस्पष्ट करने में सहायक होती है और वास्तविकता पर चित्त का केन्द्रित होना इसे स्थिर करता है।

उदाहरण के रूप में अमरीका का दूरदर्शन विश्व का सबसे बड़ा विक्रयकार है। दूरदर्शन के आदी लोगों को मतिहीन कर दिया जाता है और आवश्यकता हो या न हो वे अधिक से अधिक चीजें खरीदते हैं और इस प्रकार अपने घर को कबाड़खाना बना देते हैं। अमरीका का एक व्यक्ति छ: कालीन खरीदने के लिए विवश हो गया क्योंकि यह उसे तीन कालीनों के मूल्यों पर मिल रहे थे। एक कमरे के उसके छोटे से घर में केवल एक कालीन की जगह थी, शेष पाँच

कालीन एक गोदाम में रखवाने पड़े और पिछले दस सालों में गोदाम के किराए के रूप में वह कालीनों के मूल्य से दुगुना धन दे चुका है।

मनहटन के मित्र–गण सोमवार प्राय: फोन न करने की चेतावनी देते हैं, हैरानी की बात है! सप्ताहान्त के विश्राम के पश्चात् या उन्हें अत्यन्त तरोताजा होना चाहिए। फोन करने की मनाही का कारण ये है कि शुक्रवार शाम को छुट्टी मनाने के गन्तव्य स्थान तक पहुँचने के लिए उन्हें वाहनों की भयंकर भीड़ में गाड़ी चलानी पड़ती है। तत्पश्चात् वे अपने बनाए हुए कार्यक्रम को पूरा करने में व्यस्त हो जाते हैं। रविवार दोपहर को वे वापिसी के लिए चल पड़ते हैं और यातायात की रुकावट के कारण घर पहुँचने में उन्हें घण्टों लग सकते है और अत्यन्त गुस्से में और चिड़चिड़े मिज़ाज़ के साथ वे घर पहुँचते हैं। अत: सोमवार सुबह तक उस नशे का प्रभाव बना रहना स्वाभाविक है। व्यक्ति समझ नहीं पाता कि अपने घर में ये आनन्द क्यों नहीं उठा पाता? ये समझना भ्रम है कि लम्बा सफ़र करके ही आनन्द उठाया जा सकता है।

अत्यधिक आक्रमक गतिविधियाँ इन भ्रमों को जन्म देती हैं। यह हमारी वास्तविकता के प्रति दृष्टिकोण की ओर संकेत करती है। दाईं नाड़ी जब बहुत अधिक गतिशील होती है तो व्यक्ति को शक्ति का कीड़ा काटता है। यह खटमल समझता है कि वह सभी कुछ कर सकता है और सारी शक्ति उसके दूरस्थ नियंत्रण (Remote Control) में विद्यमान है। यहाँ तक कि आनन्द उठाने के लिए भी कुछ करना आवश्यक प्रतीत होता है, अन्यथा मज़ा उठाया ही नहीं जा सकता। इस प्रकार मज़े की खोज़ में हम लोग अत्यन्त व्यस्त हैं और फिर इतने थक जाते हैं कि आनन्द लुप्त हो जाता है। वास्तव में शक्ति का ये कीड़ा गति चाहता है। गति उत्तेजना को बढ़ावा देती है, परन्तु उत्तेजना आनन्द नहीं। आनन्द हमारे चित्त का पोषण करता है उत्तेजना नहीं। उत्तेजना क्षणिक है, आनन्द अन्तर्जात। आनन्द का उद्गम वास्तविकता से है और उत्तेजना भ्रमों से उत्पन्न होती है। भ्रम चित्त को छलते चले जाएंगे और इस प्रकार इसे दुर्बलातिदुर्बल बनाते रहेंगे।

भौतिकवाद सबसे बड़ा भ्रम है। पश्चिम का फैशन उद्योग भ्रम की एक ऐसी सीमा तक पहुँच गया है कि वस्त्रों के साथ रूपान्तरकार (Designers) की पट्टी लगा देने भर से वस्त्र की कीमत दस गुनी बढ़ जाती है। हांग–कांग और

ताइवान के चतुर व्यापारियों ने इस मज़ाक को समझ लिया है। रूपान्तरकार के बनाए हुए वस्त्रों की वे नकल करते हैं, उसकी पट्टी वस्त्रों पर लगाते हैं और फिर पश्चिमी देशों के बाज़ारों में बहुत अधिक मूल्यों पर इसे बेचते हैं। पाश्चात्य् देश ये भूल गए हैं कि डिजाइनर की पट्टी नहीं, व्यक्ति का सौन्दर्यबोध महत्वपूर्ण होता है। मस्तिष्क सदैव स्वयं के साथ छल करता है इसलिए व्यक्ति को सदैव अपनी आत्मा के माध्यम से वास्तविकता की सूझ बूझ पर निर्भर करना चाहिए, जैसा कि ईसा मसीह ने जीसस क्राइस्ट के अक्वरियन गोस्पल (Aquarian Gospel of the Jesus Christ) के अध्याय चौदह के छन्द उन्नीस में वर्णन किया है।

'आत्मा की श्वास की सहायता के बिना विचारणा का कार्य उन समस्याओं का समाधान करने का प्रयत्न करना है जिन्हें हम देखते हैं, इससे अधिक कुछ नहीं। इन्द्रियों को आदेश दिया गया था कि नश्वर चीज़ों की तस्वीर मस्तिष्क में ले आएं, सच्ची चीज़ों से उनका कोई सरोकार नहीं, शाश्वत नियमों का उन्हें कोई ज्ञान नहीं। परन्तु मनुष्य की आत्मा में 'कुछ' है ऐसा 'कुछ' जो पर्दे को हटा देगा ताकि वह वास्तविक चीज़ों का संसार देख सके। इस 'कुछ' को हम 'आत्मिक चेतना' कहते हैं। यह सभी आत्माओं में सुप्त है और जब तक चैतन्य लहरी (Holy Breath) इसकी प्रिय मेहमान नहीं बन जाती, इसे जागृत नहीं किया जा सकता। यह चैतन्य लहरी हर आत्मा के दरवाजे को खटखटाती है परन्तु तब तक इसमें प्रवेश नहीं कर सकती जब तक मानव की इच्छा यह दरवाजा पूरी तरह से खोल नहीं देती।'

चैतन्य लहरी (Holy Breath) स्पष्टत: कुण्डलिनी है। कुण्डलिनी जब जागृत होती है तो हमारे अन्दर विवेकशीलता विकसित होती है और ये भ्रम एवं वास्तविकता में अन्तर बताती है।

अपने चित्त का पोषण यदि हम भ्रमों से करते हैं तो हमारा चित्त भी भ्रामक हो जाता है और स्वयं से छल करने लगता है। एक रूपान्तरकार (Designer) इतना भ्रमित हुआ कि वह पुरुषों के लिए छोटे–छोटे स्कर्ट (Mini Skirts) बनाने लगा। परिणाम स्वरूप ऐसा चित्त वास्तविकता से सम्बन्ध खोकर डांवाडोल होने लगता है। यह अमरीका की समस्या है, लोग जड़ नहीं पकड़ते लुढ़कते पत्थर की तरह से वे लुढ़कते ही रहते हैं, लुढ़कते पत्थर पर काई नहीं

चढ़तीं। परन्तु वे जाएं कहाँ? उनका कोई लक्ष्य नहीं है। कुछ समय पश्चात् वे स्वयं को लुढ़कने से रोकने की योग्यता भी खो बैठते हैं। वे अपनी ही गतिशीलता का शिकार हो जाते हैं। पेड़ की बढ़ोतरी के लिए आवश्यक है कि उसकी जड़ें गहरी हों। मानव लुढ़कते हुए पत्थर नहीं हैं, महान विकास प्रक्रिया में उनका कोई मकसद है। विकसित होकर उन्हें अपने विकास को पूर्ण करना है। मस्तिष्क में इस धारणा को रखते हुए व्यक्ति लुढ़कना बन्द करके लंगर डाल सकता है, स्थिर हो सकता है। पहले यदि वह लुढ़कता भी रहा हो तो भी कोई बात नहीं। हो सकता है तब यह मनोरंजन हो। परन्तु आइए अब हम लंगर डाल कर (स्थिर होकर) अपनी आत्मा का वास्तविक आनन्द उठाएं।

# अध्याय–7
# तनाव प्रबन्धन

पूरी रात ज़ेरी गोल्ड़ स्मिथ करवटें बदलता रहा। वह सो न पाया। आखिर उसकी पत्नी ने उसे झंझोड़ कर उससे अशान्ति का कारण पूछा। ज़ेरी ने जॉन अटकिन्स से दस हजार डालर का ऋण लिया था और दोपहर बारह बजे वह धन लौटाने का वचन जॉन को दिया था। परन्तु उसके पास लौटाने का पैसा न था। अंतत: उसकी पत्नी ने साहस जुटाया और प्रात: पाँच बजे जॉन अटकिन्स को सूचित किया कि उसे पैसा नहीं पहुँच रहा। तत्पश्चात् ज़ेरी गोल्ड स्मिथ घोड़े बेच कर सो गया। परन्तु जॉन अटकिन्स उसके बाद सो न पाया। चिन्ता का कीड़ा जॉन अटकिन्स को प्रेषित कर दिया गया था।

तनाव का कीड़ा तीसरे केन्द्र (नाभि) के बाएं भाग, पेट एवं प्लीहा क्षेत्र, पर आक्रमण करता है। यदि वे चक्र दुर्बल एवं भेद्य हो तो कोई भी बात तनाव का कारण बन सकती है। स्वाभाविक रूप से तनाव पाचन क्रिया को प्रभावित करता है और पेट की समस्याओं का कारण बनता है। तनाव पेट को उत्तेजित करता है और फलस्वरूप रस–स्राव (Secretion of Juices) असन्तुलित हो जाता है। अन्तत: इसके परिणामस्वरूप पाचन समस्याएं, दुर्बल स्वास्थ्य, मानसिक घबराहट और अनिद्रा रोग हो जाते हैं।

तनाव, विकसित समाजों की एक मुख्य समस्या है। औषधियाँ इसमें अस्थायी आराम पहुँचा सकती है परन्तु इस रोग से मुक्ति नहीं दिलाती। तीसरे चक्र के दुर्बल हो जाने के कारण तनाव प्रबुद्ध स्वभाव विकसित हो जाता है। छोटी–छोटी बातें तनाव का कारण बन सकती हैं। किसी का दस मिनट देर से आना भी तनाव को भड़का सकता है। भारी दबाव में, समय सीमाओं या अपनी शक्ति से अधिक जिम्मेदारियों में कार्य करना भी तनाव तक पहुँचा सकता है। नि:सन्देह व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों से भाग नहीं सकता। परन्तु यदि हम अपनी दृष्टि को चेतना के उच्च स्तर तक विकसित हो जाने दें तो हम 'साक्षी अवस्था ' (Witness State) में प्रवेश कर जाते हैं जहाँ हम किसी स्थिति से लिप्त नहीं होते और न ही इसकी समस्याओं से एकरूप होते हैं। ऐसी अवस्था में

हम दर्शकों सम बन जाते हैं। देखते हुए भी प्रदर्शन के परिणाम स्वरूप हमें तनाव नहीं होता। साक्षी अवस्था में प्रवेश स्वत: होता है। कुण्डलिनी जब उठती है तो चित्त को खींचकर मध्य में ले आती है। यह पहाड़ की चोटी पर खड़े होने जैसा होता है। चहुँ ओर से आप विश्व को देख सकते हैं फिर भी इससे अलग–थलग होते हैं।

प्लीहा (Spleen) शरीर का गतिमापक है। चिड़चिड़ा या उत्तेजित प्लीहा व्यक्तित्व में घबराहट उत्पन्न कर देता है। ऐसी स्थिति में सन्तुलन समाप्त हो जाता है और व्यक्ति की गलतियाँ करने की प्रवृत्ति बन जाती है। घबराहट की निरन्तरता आन्तरिक सन्तुलन एवं आत्मनियंत्रण को नष्ट करती है। अधिकतर मामलों में समस्याओं को तेजी से आने की कल्पना चिन्ता का कारण होती है। जो लोग स्वयं शान्त नहीं हो पाते वो दूसरों को भी शान्त नहीं होने देते। वे आनन्द के हत्यारे हैं। सारी अशान्ति के बावजूद भी प्राय: उनकी उपलब्धि नकारात्मक होती है, न केवल दूसरों के लिए बल्कि अपने लिए भी। धैर्य एक मात्र मरहम है। अपनी आशाओं के अनुरूप जब हम उन्नत नहीं होते तो प्राय: निराश हो जाते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि मनुष्य कम्प्यूटर नहीं है जो पूर्व योजक की आज्ञा के अनुरूप परिणाम दे सके। हमारा स्वभाव और गुण प्रकृति के वरदान हैं जिन्हें विकसित होने में पीढ़ियाँ लगी हैं। मानव के प्रयत्न, नि:सन्देह, दोषों को दूर कर सकते हैं। अनतराशे हीरे को तराश सकते हैं या कुछ नए गुण प्रदान कर सकते हैं। परन्तु यह सब किसी समय सीमा में नहीं होता। किसी हद तक प्रकृति अपना ही मार्ग अपनाती है और व्यक्ति को चाहिए कि इस परिपक्वता की प्रक्रिया को स्वीकार करे। इसे भाग्यवाद भी नहीं मान लिया जाना चाहिए क्योंकि यह भाग्य के सम्मुख अकर्मणय समर्पण नहीं है, इसके विपरीत यह चीज़ों को कार्यान्वित करने का चेतन प्रयत्न है।

स्थिर बाई नाड़ी सन्तोष प्रदान करती है। पिछले अध्यायों से यह स्पष्ट हो जाता है कि भ्रम उत्तेजना दे सकते हैं आनन्द नहीं क्योंकि आनन्द तो केवल वास्तविकता से ही आता है। इसी प्रकार सन्तोष भी वास्तविकता से आता है। भ्रम की धार पर यदि व्यक्ति सवार है तो वह कभी भी सन्तुष्ट नहीं हो सकता। उदाहरण के रूप में स्वादिष्ट भोजन से पेट तो सन्तुष्ट हो जाता है परन्तु यदि व्यक्ति की दृष्टि भूखी है तो वह सन्तुष्ट नहीं हो सकता।

आन्तरिक सन्तोष इस चक्र का गुण है। व्यक्ति बहुत थोड़ी सी चीज़ से भी सन्तुष्ट हो सकता है या चाँद को उतारकर ले आया जाए तो वो भी कम हो सकता हे। सामान्यत: देखा गया है कि जितना अधिक मनुष्य के पास होता है उतना ही अधिक वह चाहता है। हमें जब एक चीज़ मिल जाती है तो हम दूसरी की इच्छा करते हैं और इस प्रकार उपभोक्तावाद के शिकार हो जाते हैं। नया खिलौना पाकर बच्चा बहुत खुश होता है परन्तु थोड़े से दिनों के पश्चात् वह नया खिलौना माँगता है। पैसे से ही यदि सन्तोष खरीदा जा सकता तो केवल वैभवशाली लोग ही प्रसन्न होते। परन्तु बिडम्बना ये है कि अमीर लोग ही सबसे अधिक तनावग्रस्त हैं। अपने वैभव का आनन्द उठाने के लिए उनके पास समय ही नहीं है, और अधिक धन कमाने में ही वे व्यस्त हैं। लालच के काराण यह समस्या पनपती है। कैंसर की तरह से लालच बढ़ता है और बाईं तरफ की शान्ति को नष्ट कर देता है।

दृष्टि के विकसित हो जाने पर ही हम जान पाते हैं कि हम आत्मा हैं। आत्मा को प्रसन्न करने वाली चीज़ें ही हमें प्रसन्न करेंगी। आत्मा यदि सन्तुष्ट है तो हम शान्त होंगे। अत: सभी महान सन्तों, अवतरणों जैसे भगवान कृष्ण, ईसा–मसीह, पैगम्बर मोहम्मद, लाओत्से, कन्फ्यूशियस, मोजिज़, ज़ोरास्टर आदि द्वारा बताये नियमाचरणों, धर्म, दस आदेशों का हमें पालन करना चाहिए। इससे हमारी आत्मा प्रसन्न रहेगी, हमारी आत्मा यदि प्रसन्न होगी तो स्वत: ही हमारा हित होगा। आत्म दमन, व्रत तथा किसी भी प्रकार की तपस्या की कोई आवश्यकता नहीं है। मनसा, वाचा, कर्मणा सच्चा होना महत्वपूर्ण है। सामूहिक सम्पूर्णता की मानव की शाश्वत खोज की यह कुँजी है।

# अध्याय–8
# लोगों के हथकण्डे

नई पीढ़ी के अमरीका के लोग रहस्यवाद से बहुत आकर्षित हैं। भारतीय मूर्तियों, राष्ट्रीय प्रतिमाओं तथा बौद्ध प्रतीकों के परिवेश (सामीप्य) में उन्हें बहुत सुख मिलता है। पावन मालाएं, अंगूठियाँ और ताबीजें पहनना और बहुत सा लोबान एवं सुगन्धि जलाने में उन्हें बहुत आनन्द आता है। सूक्ष्म जिज्ञासा शनैः शनैः उनकी मूल्य प्रणाली का अधिक रहस्यवादी क्षेत्र की ओर ले जा रही है। चिर प्रतिक्षित कुम्भ युग की प्रत्याशा के लिए वर्ष १९६७ के संगीतमय बाल (Musical Hair) का अन्ततः उदय हो रहा है। परन्तु ये साठवें दशक के हिप्पी आन्दोलन से भिन्न है क्योंकि हिप्पी आन्दोलन तो अपने स्वार्थ के लिए विद्रोह था। रहस्यवादी आन्दोलन आन्तरिक साधना की प्यास से विकसित हुआ है और उच्च चेतना की आकांक्षा करता है। सहायक होने वाले नियमों के प्रति भी लोगों का हृदय खुला है। आज का आन्दोलन कहीं अधिक ध्यान गम्य एवं वास्तविकता से परिपूर्ण है। परन्तु तन्त्रवाद के रहस्यों की गहराई में जाने को सत्य का ज्ञान नहीं मान लिया जाना चाहिए। इसके विपरीत यह तो ऐसा हुआ जैसे एक अन्धा व्यक्ति दूसरे अन्धे का पथ प्रदर्शन कर रहा हो या अन्धेरे कमरे में काली बिल्ली को खोजना, जो वास्तव में कमरे में है ही नहीं।

कुकुरमुत्तों (Mushrooms) की तरह से जादुगर और परियाँ अपनी जादुई छड़ियों के साथ प्रकट हो गए हैं तथा हेलोविन (Halloween) प्रीति भोज तथा अन्य सम्मोहनों का प्रलोभन दे रहे हैं। मनहटन (Manhatten) के सीमेंट के जंगल से बचने का इससे तीव्र मार्ग कौन सा हो सकता है कि सर्कस में सम्मिलित हो जाया जाए? करोंडों डॉलरों के उद्यम फेरी लगाने वालों की तरह से शरीर और मस्तिष्क के लिए प्रलोभित करने वाले सामान का आनन्द प्रस्तुत कर रहे हैं। चिकने पन्नों वाली पत्रिकाओं में पूर्ण पृष्ठ का विज्ञापन, दूरदर्शन विज्ञापन और लाभकारी सौदे करने के लिए दर–दर विक्रेयता रखे गए हैं। कुछ उद्यमी अपनी बिक्री को बढ़ाने के लिए हालीवुड के फिल्मी सितारों की तरह से वस्त्र पहनते हैं। और प्रदर्शन के लिए स्वयं को सजाते हैं। अमीर लोगों को

सर्वोत्तम तथा चोटी की वस्तुएं उपलब्ध करवाने के लिए आकर्षक मूल्य पट्टियाँ लगाई जाती हैं और ये वस्तुएं ही सबसे अधिक बिकती हैं। अधिकतर लोगों के लिए यह वैकल्पिक समय व्यतीत करने का साधन या जीवन शैली है। परन्तु इस विकल्प में किसी भी प्रकार आत्मज्ञान की खोज निहित नहीं है। इस विषय का सम्बन्ध अमरीका के ग्राहक के सम्मुख प्रस्तुत किए जाने वाले हजारों विकल्पों या चयनों से है, स्थिरता, वास्तविकता या सत्य के प्रति यह वचनबद्ध नहीं है। वास्तव में यह सब अल्पायु है। हर मौसम में फैशन परिवर्तित हो जाता है। उद्यमियों की कार्य प्रणाली भी बदल जाती है। प्राय: वे किसी स्वामी की तरह से छद्म वेश पहनना चाहते हैं या किसी भारतीय गुरु की तरह से गेरुए वस्त्र। ग्राहक को फँसाने के लिए बहुत सी विधियाँ खोजी जाती हैं। अधिक संवेदक अन्तर्दृष्टि, हवा में उड़ना, परमात्मा से सम्पर्क, सम्मोहन एवं अहम् को बढ़ावा देने के वचन इन शिकंजों में से कुछ हैं। आज का साहसी समाज नवीनता का आनन्द लेता है।

गुरु के प्रति एक दम से समर्पित होने से पूर्व साधक उसके कुछ पहलुओं को जान सकता है। सर्वप्रथम इस बात की जाँच पड़ताल होनी चाहिए कि गुरु जो शिक्षा देता है वह उस पर चलता भी है कि नहीं। दोरंगेपन का दोष गुरु में नहीं होना चाहिए। वह यदि त्याग की शिक्षा देता है तो उसका स्विस बैंक में खाता नहीं होना चाहिए। व्यक्ति को प्रश्न करना चाहिए, 'क्या चीज़ मुझे उस पुरुष या महिला की तरफ आकर्षित करती है? क्या ये उसकी योगसिद्धि, यौनाकर्षण या अनुयायियों की भीड़ है? क्या वो माता–पिता सम लगता है या पति–पत्नी का विकल्प? कहीं किसी समूह से जुड़े रहने की मेरी इच्छा असुरक्षा की भावना के कारण तो नहीं? क्या यह मेरा पलायन या सनक है? मेरी क्या दिलचस्पी है?' उद्देश्य यदि दूषित होगा तो शुद्ध इच्छा के अभाव के कारण व्यक्ति आत्म छल के जाल में फँस जाएगा।

सभी सम्मोहक शक्तियाँ जैसे कार्यान्वयन शक्ति (जनता को धन, सत्ता या यश के लिए गुलाम बनाना), दिव्य दर्शन शक्ति, वाक् शक्ति, रोग मुक्त करने की शक्ति, अनुभवातीत भाव (Transendent Feeling) (मस्तिष्क को शून्य कर देने की शक्ति) नक्षत्रीय यात्रा में जैसे किया जाता है, शरीर को पृथक कर लेना तथा और भी बहुत सी शक्तियाँ प्राय: मृत आत्माओं को वश में करने

का अभ्यास करने वाले लोगों में पाई जाती है। भारत के किसी भी सहजयोग ध्यान केन्द्र में दर्शाया जा सकता है कि ये शक्तियाँ मृत आत्माओं से आती हैं। अधिकतर मनोवैज्ञानिक, अवचेतन और पराचेतन समूह नशीले पदार्थों की तरह से है। वे साधकों को फँसा कर शिकंजे में ले लेते हैं। ये लोग अत्यन्त कपटी हैं और इनके जाल का जब पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

सभी शक्तियाँ धर्म–परायणता की सूचक नहीं होती। परादर्शन, ध्वनियाँ, नक्षत्रीय प्रक्षेपण, भीनी गन्ध हवा में उड़ना, भविष्य वाणियाँ, मृत आत्माओं से सम्पर्क, सभी कुछ सम्भव है, परन्तु ये सत्य तक नहीं पहुँचाती। क्षणिक रूप से ये हमें शक्ति प्रदान करते हैं। ये हमें विश्वस्त कर देती हैं परन्तु शीघ्र ही ये शक्तियाँ कष्टदायी हो जाती है। बीमारियाँ, दुख, खिन्नता तथा भिन्न समस्याओं के सम्मिश्रण का कारण बनती हैं। जैसा कि पहले भी वर्णन किया जा चुका है कि एक व्यक्तित्व द्वारा दूसरे व्यक्तित्व पर दबाव ड़ालने का यह स्पष्ट निमंत्रण है। ये ऐसे चक्कर हैं जो चाहे सच्चे साधक को नष्ट न करते हों परन्तु भ्रमित अवश्य करते हैं। ऐसे कुछ समूह बहुत ही अर्थपूर्ण हैं। परन्तु जिन खतरों के सम्मुख वे स्वयं को अनावृत कर रहे हैं उनसे वे अनभिज्ञ हैं और या फिर जिन शक्तियों से वे खिलवाड़ कर रहे हैं उनके स्वभाव का ज्ञान उन्हें नहीं है। कुछ समूह हमारे धन के पीछे पड़े हैं और कुछ हमारी आत्मा के पीछे और कुछ अन्य अपने साथ हमें भी नर्क में घसीटना चाहते हैं।

शिक्षा देकर अन्य लोगों को बुद्धिहीन कर देने का खेल अत्यन्त कुशलता का कार्य है। बीसवीं सदी इस बात की साक्षी है कि कितनी असंख्य जनता को छला गया! उदाहरण के लिए स्टालिन के विचार रूसी लोगों के मस्तिष्क पर छा गए, हिटलर ने जर्मन लोगों को उपदेश दिए और माओ ने चीनी लोगों को।

हमें यदि स्वतन्त्र रहना है तो हमें अपने पर पड़ने वाली इस अपराध दृष्टि से सावधान रहना होगा। रूढ़िवाद सबसे भयानक कुदृष्टि है। काल–मार्क्स ने चेतावनी दी थी, ''धर्म, सत्ता–लोलुप लोगों के हाथों में पड़ गया है जो श्रद्धालु लोगों का शोषण कर रहे हैं। परमात्मा के नाम पर दो विश्व युद्धों से भी अधिक रक्त बहाया गया। खेद की बात है कि परमात्मा का नाम केवल युद्ध करने के लिए ही उपयोग नहीं किया गया धन कमाने के लिए भी किया गया है। परमात्मा के विषय में बातचीत करने से पूर्व हमें स्वयं आत्मा बनना चाहिए। आइए,

परमात्मा को जानने से पहले स्वयं को जान लें। अन्यथा हम ऐसे पोंगे पण्डितों के हाथों में खेलते है जिन्होंने परमात्मा को अपनी जेब में रखा हुआ है और पलक झपकने की देरी में वे परमात्मा को प्रकट कर सकते हैं। हमें यूनान में डेल्फी के मन्दिर पर लिखी गई शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए कि, 'हे मानव, स्वयं को जान लो, तब तुम ब्रह्माण्ड तथा देवी–देवताओं को भी जान जाओगे।'

आगामी सहस्राब्दि तथा साम्यवाद एवं बर्लिन की दीवार का पतन, देशों तथा लिंगों के बीच बनी सीमाओं की समाप्ति, इंटरनेट का आगमन जैसी घटनाएं, धार्मिक अनुभवों के लिए काफी है धार्मिक हठधर्मी के लिए नहीं। रुढ़िवाद को जाना ही होगा। धर्म अब अनन्य (Exclusive) नहीं हो सकता। सभी धर्मों के सारतत्व को संगठित करके सार्वभौमिक बनाना होगा अन्यथा हम एक बार फिर कट्टरता एवं जातिवाद के शिकार हो जाएंगे। सौभाग्यवश माताजी श्री निर्मलादेवी ने ऐसे सार्वभौमि धर्म का अवलोकन किया है। सभी धर्मों के उपदेशों को उन्होंने एक ही माला में पिरो कर इसे सहजयोग नाम दिया है। इसमें भगवान कृष्ण, ईसामसीह, भगवान बुद्ध, लाओत्से, कन्फ्यूशियस, सुकरात, मोजिज़, गुरुनानक, पैगम्बर मोहम्मद और जोरास्टर की शिक्षाओं को सम्मिलित किया गया है। सभी धर्मों के अवतरणों, सन्तों, गुरुओं का सम्मान किया जाता है। इस प्रकार सभी धर्मों के लोग एक ही छाते के नीचे आ सकते हैं तथा बनावटी विभाजन समाप्त हो सकते हैं। ये चाहे एक अन्य रूढ़िवाद जैसा प्रतीत हो परन्तु एकरूपता (Pudding) इसका प्रमाण है। परिकल्पना के रूप में सहजयोग को लेकर व्यक्ति जब आत्म–साक्षात्कार के सौन्दर्य को अनुभव करता है, जिसे श्रीमाताजी सबको उन्मुक्त हृदय से प्रदान करती हैं, तब अपनी स्वतन्त्रता में रहते हुए वह चयन कर सकता है। इसमें सम्मिलित हो जाने वाली कोई बात नहीं, किसी की ओर से कोई दबाव नहीं। ध्यान धारणा के प्रतिफल के रूप में आत्मा का शानदार अनुभव अत्यन्त सहज स्वाभाविक विधियों से उसके अन्तर्अस्तित्व को पावन करके बोध की नई अवस्था में प्रवेश करता है। इसकी अभिव्यक्ति आत्मा के माध्यम से की जा सकती है मानव के सीमित मस्तिष्क के माध्यम से नहीं। फिर भी मस्तिष्क कोशिकाओं में अद्वितीय कोमलता से हुआ परिवर्तन हमें आनन्द पूर्वक इस प्रक्रिया को स्वीकार करने की आज्ञा देता है।

हमें ये भी समझना होगा कि धर्म अपने आप में लक्ष्य नहीं है, यह नींव का पत्थर है। विकास की उच्चतर स्थिति के लिए तैयारी है। आत्म साक्षात्कार एवं आत्म ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें इससे ऊपर उठना होगा। हममें से हरेक में वह शक्ति विद्यमान है परन्तु हमें इसकी इच्छा करनी होगी। अपनी आत्मा के गहन योग का व्यक्तिगत अनुभव हमें प्राप्त करना होगा। वास्तव में फ्रांसिसी साओ–कोइअन और लुई अका (Fransisi Saokoian and Louis Acka) की ज्योतिष पुस्तिका (The Astrologer's Hand Book) में ऐसे ही दिवास्वप्न का वर्णन है :

'कुम्भ युग (Aquarian Age) के आरम्भ में आध्यात्मिक पुनरुत्थान काल को चिन्हित करते हुए जब सन् २००० के करीब प्लूटो नक्षत्र (Pluto Sagittarius) में प्रवेश करेगा तब लोगों में गहन आध्यात्मिक मूल्यों का फूल ज्ञान होगा। धर्म, आज जिस प्रकार जाना जाता है, पूर्णत: परिवर्तित हो जाएगा। एक ही विश्व धर्म होगा जो परमात्मा में मानव के सीधे सहजानुभूत (Intuitive) सम्पर्क पर आधारित होगा। ब्रह्माण्ड का संचालन करने वाले मूलभूत नियमों की शिक्षा देने वाले नए आध्यात्मिक गुरु प्रकट हो जाएंगे। जीवन की निहित शक्तियों की अधिक व्यापक एवं वैज्ञानिक सूझ–बूझ के साथ नया विश्व धर्म प्राचीन महान धर्मों के सभी श्रेष्ठ गुणों को अपने में समाहित करेगा।'*

*The Astrologers, Hand Book, P-227, Planets in the Signs and Houses.

माताजी श्री निर्मला देवी का हृदय चक्र वर्ष १९९३ में
गणपति पुले तट पर खींचा गया फोटो

# अध्याय–9
# निर्वाज्य प्रेम का दिव्य स्वप्न

परमात्मा को यदि खोजना हो तो किस प्रकार हम उन्हें पहचानेंगे? उनका कोई नन्हा सा अंश तो हमारे अन्दर होना चाहिए जिसके द्वारा हम उन्हें पहचान सकें। उनका निर्वाज्य प्रेम ही हमारे अन्दर उनका वह छोटा सा अंश है। परमात्मा प्रेम एवं करुणा की शक्ति है। पूरा ब्रह्माण्ड उनके प्रेम की चादर है आप स्वयं को प्रेम नहीं कर सकते, आपको अन्य लोगों को प्रेम करना होगा। जिस प्रकार अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करने के लिए इस सुन्दर प्रकृति का सृजन किया है। उसी प्रकार जब आत्मा में हमारा प्रेम गहन हो जाता है तब हम ईश्वरत्व का अनुभव करते हैं तब हम जान पाते हैं कि प्रेम नक्षत्रों के कार्य व्यापार को गतिशीलता प्रदान करता है। यहाँ तक कि यह विश्व के भिन्न कोनों के लोगों को समीप लाता है, जैसे गैटे (Goethe) ने कल्पना की थी :

'आशीष दो मानव के मन में
जो भावना हो,
मृदु या कठोर
कोमल मन की चमक से अपनी
उसे अपना सामीप्य प्रदान कर दो।'

प्रेम केवल आमूर्त धारणा या मानसिक विचार नहीं है। हमारे धड़कते हुए हृदय की तरह से ये भी ठोस है। प्रेम ही हृदय को धड़काता है। हमारे अन्दर चौथा केन्द्र (हृदय चक्र) प्रेम की चैतन्य लहरियों से बने शरीर वाली हमारी आत्मा का स्थान है। आत्मा के प्रेम की अभिव्यक्ति, कला, संगीत, वास्तु तथा सृजनात्मकता के अन्य रूपों में हुई। ये कृतियाँ ताजमहल, लिओनार्डो–द–विनसी (Leonardo De Vinci) और माइकल एंजिलो (Michel Angelo) की चित्रकारी, विवाल्डी, मोज़र्ट, स्ट्रॉर्स और विथोवन के संगीत के कीर्ति स्तम्भ बने।

* Goethe's Faust Part II Act-5

प्रेम में सामर्थ्य होता है। अपनी अभिव्यक्ति के लिए यह भौतिक पदार्थ का

उपयोग कर सकता है। प्रेमपूर्वक बनाए गए घर में जो सौन्दर्य तथा स्नेह होता है वह किसी व्यापारिक भवन में नहीं होता। कुछ ऐसे रेस्तरां हैं जिनके मधुर स्पर्श के लिए हम उनमें जाते हैं। यह मिठास रसोईये का प्रेम होता है जो वह अपने भोजन में डालता है। प्रेम के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। प्रेम विहीन जीना शुष्क एवं अर्थहीन है तो क्यों न सभी कार्यों में हम अपना हृदय उड़ेलें, चाहे यह कार्य दफ्तर की फाइलों को इधर उधर करना ही क्यों न हो। टेलिफोन ऑपरेटर की आवाज की मिठास भी इस मृदु स्पर्श को सम्प्रेक्षित कर सकती है।

अपने नगरों को यदि हम प्रेम पूर्वक बनाए तो ये प्रेम की चैतन्य लहरियों को हजार गुना बढ़ाकर लोगों को आनन्द प्रदान कर सकते हैं। यूरोप के लोग प्राय: कहते हैं कि दक्षिण के लोगों में बहुत गर्मजोशी है। उनके प्रेम की अभिव्यक्ति उनकी वास्तुकला में होती है और नक्काशी उनके हृदयों का प्रतिबिम्ब है। उदाहरण के रूप में वेनिस और फ्लोरेन्स (Venice Florence) में से निकलते हुए ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वप्न देख रहे हों। वहाँ की कलाकृतियाँ कितनी शक्ति एवं प्रेरणा प्रदायक हैं। कलाकारों के हृदय से ऐसी प्रेम की सृजनात्मकता की सरिता बह निकली। इनके प्रेम की शक्ति इतनी महान है कि यह आज भी विश्व भर के लोगों को आकर्षित करती है। हाँ, यह प्रेम का जादू है। यही जादू नव सहस्राब्दि को सम्मोहित कर रहा है। सरकारी नीतियों, दफ्तरों, कारखानों तथा जन संस्थानों में हमारी योजनाएं यदि लोगों को आनन्द एवं प्रसन्नता नहीं प्रदान कर सकती तो इनका क्या लाभ है? सरकारी नीतियों को बनाते हुए जनता के हित की थोड़ी सी परवाह और उनसे बाँटना ही काफी है। चाहे समय पर उत्पादन लक्ष्य प्राप्त कर लिए जाएं परन्तु उनका क्या लाभ है?

योजनाबद्ध यदि हृदय की उपेक्षा करती है तो यह असन्तुलित हो जाती है। इसके परिणाम अत्यन्त शुष्क एवं आनन्द विहीन होते हैं। हैरानी की बात नहीं है कि पीढ़ियों की उन्नति और उपलब्धि के बाद भी लोग शुष्क एवं आनन्दविहीन हैं। लाभ कमाने के लिए उत्पादन नीतियाँ तथा विक्रय विधियाँ नियत की जाती हैं। यह दबाव पूरे समाज के आर्थिक क्षेत्र में फैल जाता है। सफलता और आक्रामकता मानव मूल्य पर छा जाती है। पाठशालाएं नई उत्पाद प्रकृति के विषय में बच्चों को अनुबंधित करने के लिए विशाल उत्पाद कारखाने बन गए हैं।

यही बच्चे कल के तेज़ तर्रार कार्यकारी उद्यमी एवं विक्रेयता आदि होंगे। उन्हीं पर परास्त करने, दौड़ लगाने और विजय प्राप्त करने का बोझ है। यह विजेताओं का विश्व है परन्तु विडम्बना ये है कि अन्त में कोई विजेता नहीं होता। इस चूहा दौड़ में सभी एक–दूसरे को परास्त करने में लगे हैं। सफल जापानी व्यापारी बहुत बड़ी संख्या में छोटी उम्र में ही हृदयाघात से मर रहे हैं और हिप्पी लोगों में आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अत्याधिक गतिशीलता और अशान्त जीवन शैली के परिणामस्वरूप सभी प्रकार की मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक असन्तुलनता तथा असमर्थता पनप रही है। हार्बर्ट व्यापार पाठशाला चाहे व्यक्ति को सफल होना सिखा दे परन्तु यह खुश रहना नहीं सिखाती।

हृदय चक्र के माध्यम से आशीष और पावन प्रेम के आनन्दतिरेक (ecstsay) का अनुभव होता है। जहाँ एक साथी स्वामित्व भाव से पूर्ण है या दूसरे को दबाता है वहाँ सम्बन्धों का गला घुट जाता है। आत्मा के प्रेम की लहरियों को बहने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। दोनों साथियों को चाहिए कि एक दूसरे का सम्मान करें। रौबीले व्यक्तित्व से दूसरे साथी की उन्नति को अवरोधित न करें। महिला समानता का दावा करती है और किसी भी प्रकार के दबाव का विरोध करती है। शारीरिक शक्ति के कारण प्राय: पुरुष धनार्जक बन जाता है। पैसे से प्राप्त शक्ति के कारण वह अपने आपको श्रेष्ठ समझने लगता है। ऐसी स्थितियों में जहाँ महिला अपने अधिकार पर बल नहीं दे सकती वह हताश हो जाती है और उसमें दबा–दबा क्रोध उत्पन्न हो जाता है। ये क्रोध प्राय: बच्चों पर निकलता है, कई बार चरित्रहीनता और स्नायु रोगों (Neurosis) के रूप में भी। स्तन कैंसर तथा अन्य महिलाओं सम्बन्धी समस्याओं का कारण उन पर दबाव या दुर्व्यवहार में भी खोजा जा सकता है।

समाज चाहे सामाजिक सुरक्षा प्रदान करे फिर भी यदि समाज के वृद्ध लोगों को इस चीज़ का ज्ञान हो कि उनका अन्त वृद्ध–आश्रमों में होना है तो वे सदैव असुरक्षित महसूस करेंगे। पैसे से भावनात्मक सुरक्षा नहीं खरीदी जा सकती। वृद्धावस्था तो एक प्रकार का बचपन है जिसमें प्रेम एवं देखभाल का महत्व सर्वोपरि है। बुजुर्गों का आशीर्वाद अत्यन्त शान्ति एवं आनन्ददायक होता है।

व्यक्तिवाद पर बहुत अधिक बल दिए जाने का परिणाम अकेलापन है। प्रेम

को पुरुष सम्बन्धों तक सीमित रूप दिया गया है। प्रेम तो रस का वह बहाव है जो सभी डालियों में बहता है, बच्चों, माता–पिता, भाई–बहन, मित्र, बुजुर्ग, नौकरों आदि में। जहाँ लोग हृदय से कार्य करते हैं वहाँ भरपूर आनन्द होता है। बहुत से लोग जहाँ एक दूसरे की देखभाल करते हैं और मिल बाँट कर लेते हैं वहाँ नए विश्व की घोषणा करने के लिए पूरे समाज का हृदय चक्र खुल जाता है। नि:सन्देह प्रेम की शक्ति कार्य करती है। सृष्टि स्वयं इस बात की सर्वोत्तम साक्षी है कि किस प्रकार परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति कार्य करती है।

प्रेम आत्मविश्वास को जन्म देता है। आत्मविश्वास से व्यक्ति में, स्वाभाविक रूप से, सुरक्षा तन्त्र दृढ़ हो जाता है और बाह्य नकारात्मक प्रभावों और भावनात्मक आघातों से रक्षा करता है। परन्तु भय हमारे प्राकृतिक प्रतिरक्षण (Immunity) को दुर्बल करता है और हमें प्रत्यूर्जता (Vulnerable to Allergies) रोगों मनोदैहिक समस्याओं तथा अन्य व्यक्तियों के अवांछित दबावों के प्रति भेद्य (दुर्बल) बनाता है। हृदय चक्र जब दृढ़ होगा तो व्यक्तित्व का विकास होगा, व्यक्तित्व निखरेगा ऐसा व्यक्ति योद्धा की तरह से जीवन का सामना कर सकता है। भय की खाई के शिकंजे में जकड़ जाने से हृदय की धड़कन और स्तन समस्याओं जैसी असुरक्षा भाव से उत्पन्न होने वाले रोग उत्पन्न हो जाते हैं। आधुनिक मनोविज्ञान असुरक्षा भाव को बहुत सी मनोग्रन्थियों का कारण मानता है परन्तु असुरक्षा का स्रोत अहंभाव है।

बचपन में व्यक्ति चाहे मातृ प्रेम से वंचित रहा हो, सम्पन्न सम्बन्ध इस कमी को भर सकता है। जब हम हृदय से आचरण करते हैं तब दूसरों की कमियाँ नज़रअन्दाज़ करते हैं। आसानी से हम दे सकते हैं और बाँट सकते हैं। स्वत: बच्चों को सभी कुछ दे देना माँ के लिए भार नहीं होता यह तो उसके प्रेम की पुकार होती है। प्रेम परिवार की जीवनदायिनी शक्ति है जो इसे बाँधती है, सम्भालती है और इसका पोषण करती है।

सशक्त हृदय स्वस्थ व्यक्तित्व का आधार है। प्रेम का पोषण प्राप्त करके यह सहृदयता एवं प्रसन्नता प्रसारित करता है। प्रेम प्रकृति का उपकरण है। प्रेम के माध्यम से धरा में से पोषण प्राप्त करके बीज़ अंकुरित होता है। चिकित्सक का प्रेम और सहृदयता उसके उपचार की स्वास्थ्य प्रदायी शक्ति को शक्ति प्रदान करते हैं। सहृदय एवं प्रेममय व्यक्ति के साथ होने से ही रोग मुक्त हो सकते हैं।

ऐसे व्यक्ति की चैतन्य लहरियाँ अन्य लोगों को वैसे ही आकर्षित करती है जैसे शहद की ओर मधुमक्खियाँ आकर्षित होती हैं। यह प्रेम ही करुणा का रूप धारण करता है और हमें विवश करता है कि बिना किसी सोच–विचार के मानव मात्र की सहायता के लिए निकल पड़ें। तब न तो यह नैतिक विवशता होती है और न मानसिक निर्णय, यह तो मात्र नैसर्गिक कार्य होता है। दूसरों के दु:ख से हृदय पसीज उठता है क्योंकि अपना प्रतिबिम्ब इसमें विद्यमान है।

श्रीमाताजी के जीवन में प्रतिदिन ऐसी घटनाएं होती हैं कि अन्य लोगों के दर्द की अभिव्यक्ति उनके साक्षात् शरीर पर होती है। उनका शरीर इतना करुणामय है कि अन्य लोगों के कष्ट को सोख लेता है। बहुत बार ये देखा गया है कि उनके सम्मुख आते ही रोगी को आराम होने लगता है जबकि उनका शरीर दर्द से ऐंठ जाता है। विनम्रता पूर्वक मुस्करा कर वो कहती हैं, ''ओह, कुछ नहीं है, केवल मेरा शरीर'' (केवल मेरे शरीर में दर्द है) और रोगी रोगमुक्त हो जाता है।

हृदय को बन्द रखना भयंकर गलती है। जितना चाहे व्यक्ति दु:खी हो, जितना चाहे हृदय चक्र अवरोधित हो, याद रखें कि इसके अन्दर आपकी प्रेममयी 'माँ' विराजित हैं। वे आपकी व्यक्तिगत 'माँ' हैं, आपकी कुण्डलिनी। वे परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से जुड़ी हुई हैं, उस शक्ति से जो कभी आपको त्यागती नहीं। उनका प्रेम निर्वाज्य है। केवल उनका स्नेहमय तेज़ (Glow) हमें उनकी शरण में आकर्षित करता है।

माताजी श्री निर्मला देवी का विशुद्धि चक्र वर्ष १९९५ में
लिए गए फोटो में विशुद्धि चक्र से चैतन्य लहरियाँ निकलती हुई।

# अध्याय–10
# मैं निर्दोष हूँ

आत्मा हमारे सम्मुख प्रकट करती है कि हम परमेश्वरी माँ के विशाल परिवार के अंग–प्रत्यंग है। अपनी बुद्धि से संचालित होकर हम आत्मा से परे हट जाते हैं। बुद्धि सदैव महत्वपूर्ण स्थिति लेना चाहती है। इस प्रक्रिया में यह अपनी वास्तविकता का ज्ञान खो बैठती है। व्यक्ति स्वयं को सामूहिकता से पृथक करके अपने तथा अन्य लोगों के व्यक्तित्व के संकट में फँस जाता है। दूसरों पर अपनी श्रेष्ठता जतलाकर उनपर रौब जमाने का प्रयत्न हम कर सकते हैं। दूसरों को प्रभावित करने के लिए हम एक विशेष रूप धारण करने का प्रयत्न करते हैं तो सच्चे ज्ञान के विपरीत जाते हैं क्योंकि सच्चा ज्ञान तो ये है कि दूसरा व्यक्ति हमारे अतिरिक्त कोई अन्य नहीं। दूसरों के प्रति जब हम छली रूप दर्शाते हैं तो एक प्रकार से अपनी–अपनी नजरों में गिर जाते हैं यह भ्रम पाँचवे चक्र के बाई ओर बहुत बड़ा अवरोध खड़ा कर देता है।

जब हम खेलते हैं तब भी अपना मूल्यांकन करने लगते हैं प्राय: और लोग भी हमारे से अधिक सफल व्यक्ति हो सकते हैं। उदाहरण के रूप में कोई विद्यार्थी खेल कूद में, पढ़ाई में या प्रसिद्धि में हम से अच्छा हो सकता है। शनै: शनै: हममें हीन या दोष भावना पनपने लगती है कि हम बहुत उत्तम नहीं हैं। सदैव हम दूसरे लोगों से आगे नहीं रह सकते। कोई हमसे अधिक निपुण, कुशल, सफल और सुन्दर हो सकता है। प्रतिक्रिया, प्राय: ईर्ष्या होती है। आश्चर्य की बात है कि लोग अपने अंतरंग मित्रों से भी ईर्ष्या करते हैं। कोई नई चीज़ यदि उनका मित्र खरीद लाए तो अगले दिन वही चीज़ उनको खरीदनी है। क्या होना चाहिए और क्या नहीं होना चाहिए के मामले में भी यही आम लक्षण है। लोग दूसरों के वैभव, पद, सम्मान या रूप के कारण उनसे ईर्ष्या करते हैं। अपनी गलत ढंग से पहचान करके हम दल–दल में घुस जाते हैं। हृदय के माध्यम से अन्य लोगों को समझने के स्थान पर अपने मस्तिष्क से हम उनसे स्पर्धा करने लगते हैं। ऐसा करना आत्मघातक है। यह आत्म छलना है जिसे हमारे भ्रम जन्म देते हैं।

पाँचवा चक्र आत्मा के प्रेम की अभिव्यक्ति करने के लिए विकसित होता है, कि किस प्रकार हम वाणी माधुर्य द्वारा अन्य लोगों को आनन्दित कर सकें और उन्हें बता सकें कि हम उन्हें कितना प्रेम करते हैं। अन्य लोगों के प्रति प्रेम प्रकट करने के स्थान पर यदि हम इसकी शक्ति को दोष भाव की ओर मोड़ लें तो हम निश्चित रूप से अपने उत्थान को बाधित करते हैं। हम जब ये महसूस कर लेते हैं कि हम आत्मा हैं तो आत्मा तो शाश्वत है, पावन है, इसलिए यह दोषी नहीं हो सकती। व्यक्ति यदि दोषभाव ग्रस्त हो तो इस समस्या का सर्वोत्तम समाधान ये है कि गर्दन और कन्धे के जोड़ पर बाईं ओर अपना दायाँ हाथ (सामने की ओर से ले जाते हुए) रखकर प्रतिदिन श्री माताजी के फोटोग्राफ के सम्मुख कहें, ''श्री माताजी मैं आत्मा हूँ और निर्दोष हूँ।'' इस सत्य के प्रति हम पूर्णत: चेतन हो जाते है तो मार्ग खुल जाता है।

एक अन्य प्रतिक्रिया, आक्रामकता दूसरी पराकाष्ठा हैं। दूसरे लोगों को वश में करने का सुगमतम उपाय ये है कि उन्हें महसूस करा दिया जाए कि, 'वे दोषी हैं।' दोष भावना महसूस करवा देने वाले लोगों के हाथों में लोग आसानी से खेलते हैं। चर्चों के पादरियों ने इस आक्रामकता को अपराध स्वीकरण (Confession) का नाम दे दिया।

हमारे अन्दर हमारी माँ–कुण्डलिनी–विराजमान हैं। वे हमें इतना प्रेम करती है कि हमारे दोषों को कभी नहीं देखती। रात दिन हमारे चक्रों को खोलने तथा उनकी मरम्मत करने के अथक प्रयत्न करती रहती हैं। जब हम उनकी चैतन्य लहरियों से सम्बन्ध जोड़ना सीख लेते हैं तो सभी बाधाओं को दूर करने के लिए उन्हें प्रवर्तित (Direct) कर सकते हैं। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् हम महसूस करते हैं कि हम महान आदि पुरुष, परमात्मा के अंग–प्रत्यंग है, बृहत् ब्रह्माण्ड के अन्दर लघु ब्रह्माण्ड। अलग से हमारी कोई पहचान नहीं है। हम सब एक हैं। जैसे श्री माताजी प्राय: कहती हैं।

'दूसरा कौन है? आप यदि सूर्य और सूर्य का प्रकाश हैं, आप यदि चाँद और चाँदनी हैं, तो द्वैत (Duality) कहाँ है? केवल पृथक्करण (Saperation) में ही द्वैत होता है और पृथक्करण के कारण ही आप अपने और अपनों में दूरी महसूस करते हैं। यदि सभी कुछ मैं ही हूँ तो दूसरा कौन है? जब मस्तिष्क अपनी पहचान खो देता है तो तथाकथित सीमित मस्तिष्क असीम हो जाता है।'

एक बार जब हम इस दोष से मुक्त हो जाते हैं तो हमारी सम्पर्क नाड़ियाँ खुल जाती हैं और इसके कारण हृदय की भावनाओं को अभिव्यक्त करना सुगम हो जाता है। लोग जब परस्पर बातचीत करते हैं तो प्रेम बहने लगता है। आजकल लोग एक दूसरे से बातचीत करने के स्थान पर दूरदर्शन देखना अधिक पसन्द करते हैं। परन्तु दूरदर्शन आपको प्रेम नहीं दे सकता। प्रेम तो केवल मानव ही दे सकता है। लोग जब परस्पर सम्पर्क नहीं रख पाते, वे स्वयं को दबाए रखते हैं; तब वे अत्यन्त अकेले और असुरक्षित महसूस करते हैं। सम्बन्ध बनाए रखने से लोग खुलते हैं और अपनी दबी हुई भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। परस्पर बातचीत करने से ही बहुत सी समस्याओं का समाधान हो जाता है। परन्तु समस्या ये है कि बहुत से लोग तो समस्याओं का समाधान खोजना ही नहीं चाहते। वे सिर्फ बातों के लिए ही बात करते हैं, नहीं जानते कि सम्पर्क किस प्रकार अपनी विशेष समस्याओं और चिन्ताओं के सफल समाधान के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करने के स्थान पर वे अपनी स्थिति को न्यायोचित ठहराते हैं और अपने तर्कसंगत ठहराने के लिए अन्य लोगों का समर्थन चाहते हैं। इंग्लैण्ड के देहातों में से यात्रा करना सुखद है। एक अंग्रेज थे जो लगातार पाँच घण्टे तक समाचार पत्र पर झुके रहे, अपने सहयात्री की ओर एक बार भी मुस्करा कर न देखा। कुछ दिनों के पश्चात् वही व्यक्ति गली में आते–जाते लोगों से हँसता और गप्पे मारता नजर आया। तब इस बात का पता चला कि वह मदिरा के नशे में ही इतना स्नेहिल होता है। कहा जाता है कि देश के उस क्षेत्र में केवल नशे में मदमस्त लोग ही गलियों में दूसरे लोगों से बातचीत करते हुए देखे जा सकते हैं।

वास्तव में ये बड़ी अजीब बात है कि मानव होते हुए भी हमें एक–दूसरे से बातचीत करना कठिन लगता है! मानो हम भिन्न ग्रहों से आये हुए लोग हैं! हम न तो चाँद से आए हैं न मंगल से। हम आस–पास के क्षेत्रों से हैं और हमारी एक सी मान्यताएँ हैं। हमारे अन्दर परस्पर बातचीत करने, हँसने और आनन्द लेने की योग्यता होनी चाहिए। मस्तिष्क में कुछ अटपटे विचार हृदय चक्र को अवरोधित करते हैं और व्यक्तिगत सम्पर्क में बाधा आती है। हैरानी की बात है कि इंटरनेट के माध्यम से विद्युतीय सम्पर्को में सहसा इतनी वृद्धि हो गई है परन्तु व्यक्तिगत सम्पर्क संकुचित हो रहे हैं और इनका पतन हो रहा है! लोग,

परस्पर बातचीत करने में संकोच करते हैं क्योंकि उन्होंने बहुत से बनावटी अवरोध बना लिए हैं। कोई यदि परस्पर बात ही नहीं करेगा तो किस प्रकार वह (पुरुष या महिला) आत्मा का आनन्द उठा सकेंगे। हमें इन मानसिक अवधारणाओं को त्यागना होगा और अपनी वास्तविकता, जो कि प्रेम है, का आनन्द उठाना होगा।

खलील जिब्रान ने कहा था: ''आत्मा की गहनता प्राप्त करने के अतिरिक्त मित्रता का कोई अर्थ नहीं।''

हम आत्मा हैं और पृथ्वी पर एक दूसरे की आत्मा का पोषण करने के लिए अवतरित हुए हैं।

वर्ष १९९४ में इंग्लैण्ड में खींचे गए इस चित्र से माताजी श्री निर्मला देवी के आज्ञा चक्र या तीसरी आँख से निकलती हुई चैतन्य लहरियाँ

# अध्याय–11
# प्रेम–दोष निवारण का एकमात्र मार्ग

'मुझे पसन्द नहीं है' या ' मैं घृणा करता हूँ ' आधुनिक समाज की दो आम अभिव्यतियाँ हैं। हमारा अहं जब बहुत दृढ़ हो जाता है तो सभी कुछ नियंत्रित करने वाले अधिकारी की तरह से हम स्वयं को पेश करने लगते हैं। अहं की पक्की परत हमारे मस्तिष्क को ढक लेती है और इस अहं के हाथों जो चीज़ हमें पसन्द नहीं आती उसकी हम निन्दा करने लगते हैं।

हम चाहते हैं कि हमारे विचार अन्य लोगों पर हावी हों। बुद्धि की गति जब बहुत अधिक दाईं ओर को हो जाती है तो हम अटपटे विचार फैलाने लगते हैं और हमारे सिर पर सींग निकल आते हैं। आत्मा से विमुख समाज विसंगतियों की ओर चल पड़ता है और हिटलर जैसे बहुत से लोगों को जन्म देता है। ऐसे समाज का कार–व्यवहार रेखीय (Linear) होता है और मूर्खता की पराकाष्ठा तक पहुँच जाता है। उदाहरण के रूप में अधिकारी वर्ग अटपटी नीतियाँ बनाते हैं जो अन्ततः प्रतिक्षेपित होकर आघात पहुँचाती है। मापदण्ड ये है कि वास्तविक उपलब्धियों की अपेक्षा उन्नति दिखाई पड़नी चाहिए। सार्वजनिक धन की विशाल हानि इसका परिणाम है। उदाहरणतया जो राष्ट्र अपने बजट का बहुत बड़ा भाग प्रदूषण नियंत्रण पर खर्च करते हैं वही आण्विक कचरे जैसे सबसे अधिक घातक ज़हर उत्पन्न कर रहे हैं।

अत्यधिक तपे हुए जिग़र पर जब प्रेम के शीतल तीर चलते हैं तो अहम् शान्त हो जाता है। परन्तु अहं का सामना यदि दूसरे अहम् से हो तो यह भड़क उठता है। अतः महत्वपूर्ण बात यह है कि अहम् को अहम् से न तो लड़ना चाहिए और न ही इसे भड़काना चाहिए। सुगमतम कार्य अहं को क्षमा कर देना है, स्वयं को तथा अन्य लोगों को क्षमा कर देना। कुछ लोग कहते हैं, 'मैं क्षमा नहीं कर सकता।' उनका अहं ही उन्हें क्षमा नहीं करने देता। अहम् जितना बड़ा है, क्षमा करना उतना की कठिन है। जिन लोगों की दृष्टि में या हृदय में क्षमा की इच्छा नहीं होती उनका छठा चक्र अवरोधित हो जाता है। इस चक्र को तीसरी आँख भी कहते हैं। हमारे पास क्षमा करने या न करने के लिए क्या है? किसी दूसरे का

हम क्या कर सकते हैं? ये सब बातें मिथ्या हैं। किसी अन्य के प्रति दुर्भावना हमारे अपने मस्तिष्क की मैल है जो हमारे उत्थान में बाधा पहुँचाती है और फिर जिस व्यक्ति को क्षमा नहीं किया गया है वह अप्रभावित रहता है। क्षमाहीनता अहं को भड़काने का खेल मात्र है। अहं से ऊपर उठने के लिए हमें ईसामसीह से क्षमा का पाठ सीखना चाहिए। उनके सन्देश की ओर जो ध्यान नहीं देते वे परमात्मा के उस साम्राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते जिसका वचन उन्होंने दिया था। सूफी सन्तों का यह विश्वास है कि जिन लोगों को परमात्मा के योग का ज्ञान तथा उनके साक्षात्कार का ज्ञान हो गया है उनके हृदय में बैर विरोध की भावना समाप्त हो जाती है और वे परमात्मा में लीन रहते हैं।

क्षमा न कर सकने वाले लोगों को समझ लेना चाहिए कि उनका अहम् इतना कठोर हो गया है कि यह कुण्डलिनी को उठने नहीं देता। उन्हें चाहिए कि अहम् से खिलवाड़ करना शुरू कर दें, इसका मज़ाक उड़ाएं, इस पर हंसें। शनैः शनैः अहम् का शिकंजा ढीला पड़ने लगता है। जब यह अधिक लचीला हो जाता है तब इसके खेल को व्यक्ति समझ सकता है और इसके बन्धन से मुक्त हो सकता है। जब भी हम अहम् में फँस जाए तो इसको ढीला करने के लिए इसके साथ खेला जाने वाला कोई खेल खोज लें। वैसे भी तो जीवन में मस्तिष्क के खेल के माध्यम से हम खेल खेल रहे हैं।

पशु अपने मस्ष्कि का प्रक्षेपण नहीं कर सकता परन्तु मानव में, वास्तव में, अस्तित्वविहीन वस्तु का भी प्रक्षेपण करने की योग्यता है। उदाहरण के रूप में कलाकार किसी अमूर्त चीज़ को प्रक्षेपित करके उसे चित्रपट (Canvas) पर उतार देता है। कलाकार किसी विचार की कल्पना करता है और फिर इसको आकार प्रदान कर देता है। इस शक्ति के माध्यम से हमने अपने मस्तिष्क से खेलना सीखा है, हवाई किले बनाने ओर उन्हें तोड़ना सीखा है। यह खेल मस्तिष्क की महान शक्ति है। यह हमें बहुत सी सीमाओं को पार करके भिन्न आयामों में फैलने की शक्ति देता है। परन्तु बहुत बार हम अपने ही खेल में फँस जाते हैं और तब स्वयं को मुक्त करना चाहते हैं। इस खेल या नाटक का दूसरा नाम माया या भ्रम है।

भ्रम अहम् को छेड़ते हैं और इसकी बुद्धि एवं तार्किकता की परछाइयों के साथ लुका–छिपी खेल खेलते हैं। यह स्वप्न जैसा है। स्वप्न अवस्था में भी हम

मान लेते है कि घटनाएं घटित हो रही हैं। परन्तु नींद टूटने पर हमारा यह भ्रम टूट जाता है। इसी प्रकार मस्तिष्क स्वयं से छल करता है। कभी हम कहते हैं, 'ओह! मुझे लगा कि यह ऐसा था, यह मेरी गलतफहमी थी।' हमारा निष्कर्ष एक तर्कसंगत मानसिक धारणा थी। क्योंकि तर्कसंगत निष्कर्ष की परिकल्पना अपने आप में ही एक भ्रम है। अत: बुद्धि भी भ्रम की शिकार हो जाती है। जब हम अहम् से ऊपर उठ जाते हैं तो गलतियाँ स्पष्ट होकर हमारे सम्मुख उभरती हैं। जब पूर्ण सत्य–आत्मा का अनुभव हमें होता है तो भ्रम का परदा गिर जाता है। बुद्धि से हमारी लिप्सा समाप्त हो जाती है और हमारा दृष्टिकोण तृतीय व्यक्ति जैसा हो जाता है जो केवल साक्षी है। मस्तिष्क प्याज सम है। प्याज के दिल तक पहुँचने के पश्चात् इसे और अधिक छीला नहीं जा सकता। यह चरम बिन्दु है। सभी विचार और धारणाएं जब समाप्त हो जाते हैं तब केवल शुद्ध आत्मा चमकती है। सत्य के ज्ञान से भरे जाने के लिए प्याले का खाली होना आवश्यक है। प्याला यदि लबालब भरा हुआ है तो गुरु आपको कुछ नहीं दे पाएगा।

प्रतिशोध की भावना वास्तव में बचकानी भावना है। क्योंकि हम उन्नत नहीं होना चाहते इसलिए दोषी को दण्ड देने का बचकाना खेल खेलते रहते हैं। कातिल यदि भाग गया है तो उसके पुत्र को ही फाँसी चढ़ा दो। दुर्भाग्यवश इसका श्रेय हम परमात्मा को देते हैं। हमारे अपराधों के लिए हमें दण्डित करने वाले क्रुद्ध परमात्मा का भय हम पर थोप दिया गया है।

दण्ड देने वाले क्रद्ध परमात्मा का विचार एक अन्य प्रवंचना है। परमात्मा तो एक प्रेममयी माँ है जो हृदय से अपने बच्चों को प्रेम करती हैं। हमारी कुण्डलिनी के माध्यम से हर क्षण वे हमें आवाज देकर कहती हैं कि अपनी आत्मा के समीप आ जाओ। वे हमारे दोषों को नहीं देखतीं, हमारे अन्दर प्रेम की अभिव्यक्ति की सृष्टि करती हैं। उस प्रेम की गतिविधि अपने आप दोषों को सुधारती है। आदिशक्ति माँ से वह प्रेम की कला हमारी दादी माँओ तक पहुँची। किस प्रकार प्रेमपूर्वक उन्होंने हमारा लालन–पालन किया! हम स्वत: ही उनके आदेश का पालन करते हैं। लोकप्रिय आन्दोलन में कुमारी मैरी की अभिव्यक्ति रोग–मुक्ति प्रदायिका तथा प्रेम एवं करूणा के सार–तत्व के रूप में की। लाओत्से से उन्हें 'ताओ ' की संज्ञा दी:

''जिस ताओ के विषय में बात

की जा सके।
वह पूर्ण ताओ नहीं है।
नाम जो दिए जा सकें,
पूर्ण नाम नहीं हैं
नाम विहीन हैं उदगम स्वर्ग और धरा का
नाम तो है केवल सर्वजन्मदाता माँ का। ''*

* "The Tao that can be told of
is not the absolute Tao.
The names that can be given
are not the absolute names,
The nameless is the origin of Heaven
and Earth
The named is the Mother of all things."

वर्ष १९८८ में इटली में खींचे गए इस चित्र से माताजी श्री निर्मला देवी के सहस्रार चक्र (सातवें केन्द्र) पर मण्डलाकार चैतन्य

# अध्याय–12
# सर्वव्यापी प्रेम का विस्तार

सिर के शिखर पर तालू अस्थि को जब कुण्डलिनी भेदती है तो पहली बार व्यक्ति दैवी कृपा तथा विशुद्ध आनन्द की फुहार का अनुभव करता है। अगाध आन्तरिक पूर्णता और आनन्द की भावना से व्यक्ति अभिभूत हो जाता है। फिर कोई इच्छा बाकी नहीं रह जाती। हृदय की हर धड़कन प्रेम के ऐसे शोले फेंकती है जो सभी को गले लगा लेना चाहते हैं। अचानक मनुष्य का विस्तार अनन्तता में हो जाता है और प्रकृति की हर चीज़ के लिए अथाह प्रेम की भावना उसमें उमड़ पड़ती है। प्रेम की नई भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति करना सुगमतम लगता है। यह सब इतना सहज है कि व्यक्ति हैरान होता है कि इसका उपयोग उसने पहले क्यों नहीं किया। 'व्यक्ति फूलों के साथ मुस्काने लगता है, पक्षियों से बातचीत करता है और पवन के संग नृत्य। प्रकृति में से गुजरती हुई भूमिगत सीमाओं के साथ उस जल की तरह से व्यक्ति बहता है जो पेड़ के रस–सम ऊपर को जाकर आकाश में उड़ते हुए पक्षियों के रहस्यों, धूप में उड़ती हुई मधुमक्खियों और हरित पर्वतीय क्षत्रों में खिले फूलों के विषय में सोचता है।''
अब्राहम लिंकन (पुत्र के अध्यापन को लिखे गए पत्र से)

अपनी कुण्डलिनी के माध्यम से व्यक्ति सुगमता से दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी को महसूस कर सकता है। आत्माओं के मिलन में केवल प्रेम होता है नकाब नहीं। पूरा विश्व एक परिवार बन जाता है। शरीर यद्यपि अलग होते हैं आत्माएं एक हो जाती हैं। सभी हमारे सम्बन्धी बन जाते हैं और हर चीज़ हमारी हो जाती है, फिर भी हम किसी चीज़ से लिप्त नहीं होते। बिना किए व्यक्ति सभी कार्य पूरे करता है। एक अज्ञात और किसी लिखित संविधान में अवर्णित स्वतन्त्रता का वह आनन्द लेता है। अपनी निर्धारित भूमिका या जीवन कार्य भी मनुष्य करता रहता है। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि यह कार्य जुलाहे का है, बढ़ई का, कसाई का, मछुआरे, व्यापारी, राजनीतिज्ञ या योद्धा का। शान्ति की अवस्था अन्तर्निहित है। अन्दर पूर्ण मौन है। आन्तरिक स्थिति से, बिना प्रभावित हुए व्यक्ति कोई भी कार्य कर सकता है। उदाहरण के रूप में जिन लोगों

ने यह स्थिति प्राप्त की उनमें राजा जनक शासक थे, महात्मा गाँधी नेता, सन्त कबीर बुनकर थे और चाणक्य राजनीतिज्ञ।

एक प्रकार से व्यक्ति अपनी इच्छाओं के पीछे दौड़ना छोड़ देता है। करुणा की रस्सियाँ हमारे तारों को भिन्न दिशाओं में खींचती हैं। मस्तिष्क विचारों की अपेक्षा अधिक करुणा टपकाता है। जहाँ से भी प्रेम की पुकार होती है व्यक्ति वहाँ जाता है। उसका अपना समय महत्वपूर्ण नहीं होता उसका समय दूसरों के लिए होता है। परन्तु किसी भी स्तर पर व्यक्ति ये नहीं सोचता कि वह अन्य लोगों के लिए कार्य कर रहा है क्योंकि दूसरा तो कोई होता ही नहीं, केवल प्रेम है। व्यक्तित्व की सुगन्ध समाप्त नहीं होती, ठीक उसी प्रकार जैसे गुलदस्ते में गुथा हुआ फूल अपनी सुगन्ध खो नहीं देता।

जब मनुष्य सामूहिक चेतना की प्रायिकता (Frequency) से एक तार हो जाता है तो बिना किसी प्रयत्न के बहुत सी समस्याओं के समाधान स्वत: उसके सम्मुख आ जाते हैं। किसी भी चीज़ को मुनष्य समस्या के रूप में नहीं देखता, और कोई यदि उसके पास समस्या ले आए तो उसका ज्योतित चित्त विकीर्णक (Laser) की तरह से इसे विकीर्णित करता है और समाधान खोज लेता है। ये सब ऐसे होता है मानो समस्या के अन्दर ही समाधान निहित हो। ऐसे व्यक्ति का कोई स्वार्थ नहीं होता और वह अत्यन्त न्यायसंगत और तटस्थ हो सकता है। सद्सद्विवेक शक्ति व्यक्ति के अन्दर पनपती है। परन्तु ये शक्ति भी परमात्मा को समर्पित कर दी जाती है ताकि उसकी (परमात्मा) इच्छा ही हम पर शासन करें :

'' वह उनके साथ रहेगा,
और बनेंगे वे उसके लोग,
परमात्मा साक्षात् उनके साथ होंगे
और बनेंगे परमात्मा उनके
अश्रु पोछेंगे आँखों से उनकी स्वयं परमात्मा
तब न कोई मृत्यु होगी
न दु:ख, न बिलखन
न डर अब बाकी रहेगा
मृत हो चुकी है क्योंकि

सभी पुरानी चीजें।'' (ईसा मसीह का उपदेश)

करुणा परमात्मा के निर्णयों को नियंत्रित करती है। आत्मा, मस्तिष्क नहीं, उसके निर्णयों को नियंत्रित करता है। इस प्रकार उसका (परमात्मा का) निर्णय कानून बनाने वालों और कानून रक्षकों की अपेक्षा उच्च साम्राज्य से सम्बन्धित होता है। मेरी मैगडलिन (Mary Magdalene) नामक वेश्या को जब लोग पत्थर मार रहे थे तो ईसा मसीह ने कहा ''आपमें से जिसने कोई अपराध नहीं किया वह इस पर पत्थर में के।'' नि:सन्देह तत्पश्चात् उन्होंने उससे कहा, '' मैं तुम्हें अपराधी नहीं ठहरा रहा हूँ। जाओ, अब और अपराध मत करना।'' तर्कबुद्धि से संभवत: अवतरणों के कार्यों को समझ पाना कठिन है परन्तु परमात्मा की करुणा का साम्राज्य मन, मस्तिष्क और बुद्धि से परे है। अत: अपने सीमित मस्तिष्क से व्यक्ति शाश्वत और अनन्त का अवलोकन नहीं कर सकता, तो किस प्रकार हम किसी साक्षात्कारी व्यक्ति को पहचाने? वह किस प्रकार बातचीत करता है, चलता है या खाता पीता है? बाह्य रूप से वह सामान्य व्यक्ति की तरह से आचरण करता है परन्तु चैतन्य लहरियों के माध्यम से हम उसे पहचान सकते हैं। भगवद् गीता में राजकुमार अर्जुन भगवान कृष्ण से पूछते हैं, ''साक्षात्कारी व्यक्ति की क्या पहचान है? वह किस प्रकार बोलता है? वह किस प्रकार बैठता है? और किस प्रकार चलता है? भगवान कृष्ण उत्तर देते हैं , ''मस्तिष्क जब इच्छाओं से मुक्त हो जाता है और आत्मा अपने आप में सन्तुष्ट हो जाती है, ऐसा व्यक्ति ज्योतित अवस्था में है।'' अन्तस में जब सन्तुष्टि होती है तो बाहर की हर चीज़ शान्त सागर सम प्रतीत होती है वह निर्विचार समाधि की अवस्था है। विचार समुद्र में छोटी–छोटी लहरियों सम होते हैं परन्तु जब केवल प्रेम का सागर बाकी रह जाता है तो ये लहरियाँ आनन्द बन जाती हैं। चेतना, सामूहिक चेतना बनकर इसमें आनन्द भर देता है। व्यक्ति का जीवन उमड़ते हुए आनन्द सागर में परिवर्तित हो जाता है। करुणामय होकर व्यक्ति नि:स्वार्थ हो जाता है और सदैव दूसरों के हित के विषय में सोचना है।'' हम आत्मा हैं , ''जब वह सत्य हमारी वास्तविकता बन जाता है तो मस्तिष्क की पकड़ ढ़ीली पड़ जाती है। इसके साथ–साथ दु:खों, पसन्द नापसन्द से मुक्त मस्तिष्क विघटित हो जाता है। अब व्यक्ति प्रतिक्रिया नहीं करता वह अत्यन्त धैर्यवान और दूसरों के प्रति सहिष्णु हो जाता है।

सहजयोग अभ्यास से हमारे अन्दर अंगुलियों के सिरों पर चैतन्य लहरियों को महसूस करने की संवेदना विकसित हो जाती है। हर चक्र को उसकी सहसंगत अंगुली पर महसूस किया जा सकता है जो कि सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है। आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति की चैतन्य लहरियाँ शीतल होती हैं। ईसा मसीह ने इन्हें आदिशक्ति की शीतल हवा का नाम दिया है । यह शीतल हवा हमारा पथ–प्रदर्शन, आत्मा तथा उससे उत्पन्न चीज़ों की ओर करती है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है। कि एक बार जब कुण्डलिनी सातवें चक्र पर स्थापित हो जाती है तो व्यक्ति ध्यानगम्य अवस्था में होता है। यह चक्र सभी चक्रों का पीठ है। इस प्रकार अन्य चक्रों की सभी शक्तियाँ चेतना की उच्चावस्था के विस्तरण में संघटित हो जाती हैं। यह सहज, प्रयत्नविहीन, गहन अनुभव है तथा आन्तरिक उन्नति की प्रक्रिया भी। तब व्यक्ति आश्चर्य चकित होता है कि ध्यान धारणा के नाम पर भिन्न उद्यमी क्या बेच रहे हैं! आवश्यक रूप से, वे चिकित्सा विधियाँ, आत्म सम्मोहन, शिथलीकरण (Relaxation) तकनीकें और कुछ सीमा तक तनाव से दूर रहने के लिए पलायन मार्ग सुझाते हैं। संभवत: एक व्यस्त व्यापारी इतना ही कुछ खोज रहा है। अगली बैठक से पूर्व कुछ क्षणों की मानसिक शान्ति। परन्तु ये समाधान क्षणिक है। ये हमारे व्यक्तित्व को परिवर्तित नहीं करते हमें आत्मा बनना है। आत्मसाक्षात्कार के माध्यम से आत्मा के रूप में हम अपना दूसरा जन्म प्राप्त करते हैं। आत्मा से हमारा सम्बन्ध ही महत्वपूर्णतम है। सच्चाई ये है कि हम शरीर, मस्तिष्क, अहम् या बुद्धि नहीं हैं हम आत्मा हैं। ध्यान धारणा ही वह अवस्था है जिसमें हम आत्मा को एकाकारिता पा लेते हैं। आत्मा बनकर हम परमात्मा के एकरूप हो जाते हैं या जो चाहे इस स्थिति को नाम दें। इस योग प्राप्ति के पश्चात् हमारी चेतना उस अवस्था तक उन्नत होकर उसी में बनी रहती है। उस स्तर पर हमारी आत्मा ही हमे प्रेरित करती है और हमारा पथ प्रदर्शन भी। हमारी आदतें, मूल्य प्रणालियाँ और व्यक्तित्व अत्यन्त आनन्द एवं प्रेममय प्रकृति में परिवर्तित हो जाते हैं। सहजयोग सामूहिकताएं, आनन्द, उत्सव, संगीत और नृत्य से पूर्ण होती हैं। अपनी पुस्तक The Great Divorce में सी.एस.लेविस (C.S.Levis) ने यह दिव्य स्वप्न देखा।

''मेरा किसी अन्य नदी के अस्तित्व के विषय में पूछने का कारण ये था।

'नीचे जंगल की पगड़ण्डी पर घने पत्तों वाली डालियाँ उस मधुर प्रकाश में थिरकने लगी हैं, मैं नहीं जानता कि पृथ्वी पर कोई अन्य चीज़ भी ऐसा दृश्य उपस्थित कर सकती है जैसा बहते हुए जल पर पड़ती हुई इन ज्योतियों ने किया। कुछ क्षण पश्चात् मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। कोई जुलूस हमारी ओर आ रहा था और उसमें सम्मिलित लोगों से वह प्रकाश आया था। सर्वप्रथम दीप्तिमान आत्माएं आईं, मनुष्यों की आत्माएं नहीं, जिन्होंने नृत्य किया और पुष्प बरसाए, बिना आवाज के गिरते हुए, हल्के से फैलते हुए पुष्प, मानो भूतों के संसार के अनुसार हों, हर पंखुड़ी अपने वजन से सौ गुनी थी और उनका गिरना शिलाखण्डों के गिरने जैसा होगा। तब जंगल के बाएं और दाएं रास्ते के दोनों ओर युवा व्यक्ति आए, एक ओर लड़के और दूसरी ओर लड़कियाँ। यदि उनके गीत मुझे याद आ जाएं और उन्हें मैं लिख पाऊँ तो उन्हें पढ़ने वाला कोई व्यक्ति कभी न तो बीमार पड़ेगा और न वृद्ध होगा। उनके बीच में संगीतकार थे और इन सब के बाद एक महिला, जिसके सम्मान में यह सब कुछ किया गया था'' जो भी पशु–पक्षी उस महिला के समीप आया उसे उनका प्रेम प्राप्त हुआ। उसमें (महिला में) वे अपने स्वामी बन गए। और अब जीवन का बाहुल्य जो उसे ईसा–मसीह से मिला वह पिता से उन लोगों में बहता हैं।' मैंने अपने अध्यापक की ओर आश्चर्य से देखा। 'हाँ', उसने कहा, 'यह वैसे ही है जैसे तालाब में जब आप पत्थर में के और संकेन्द्रित लहरें आगे–आगे फैलती जाएं। कौन जानता है ये कहाँ समाप्त होंगी? मुक्त मानवता अभी भी छोटी है, अभी तक इसमें कोई शक्ति नहीं आई है। परन्तु अभी उस महिला जैसे महान सन्त को नन्हीं उंगली में ब्रह्माण्ड ही सभी मृत चीज़ों को जीवित अवस्था में जागृत करने का पर्याप्त आनन्द है।''

जब सामूहिक चेतना से योग स्थापित हो जाता है तो व्यक्ति को इसकी सुरक्षा और देख–रेख का आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है। चीजें घटित होने लगती हैं लोग सोचते हैं कि यह संयोग है, परन्तु आँखों से जो हम देख सकते हैं उससे कहीं अधिक इन घटनाओं में होता है। अचानक एक विशेष प्रकार से कार्य होने लगते हैं। लगातार इनका होते रहना इस बात का स्मरण कराता है कि यह सर्वव्यापी चैतन्य लहरियों का आशीर्वाद है। भगवान कृष्ण ने इसे 'योग–क्षेम' कहा अर्थात् सामूहिक चेतना से एकाकारिता होने के पश्चात् सुख–शान्ति प्राप्त

हो जाती है। ऊपर से सभी कुछ संयोग प्रतीत होता है। परन्तु वास्तव में यह सर्वव्यापी चैतन्य लहरियों की योजना है। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् इस संयोग के अर्थ को समझ लेना (इसका कूटानुवाद) आसान है। चैतन्य लहरियाँ यदि शीतल हैं तो स्पष्टत: यह इन सर्वव्यापी चैतन्य लहरियों का वरदान है जो हर क्षण हमारी देख–भाल कर रही हैं। सर्वव्यापी चैतन्य लहरियाँ विशुद्ध चेतना हैं। वे सभी कार्य करती हैं, सभी कुछ जानती हैं और उनमें सभी शक्तियाँ हैं, फिर भी ये अत्यन्त शान्त और प्रेम से परिपूर्ण हैं। नियत समय पर ये हर चीज़ पर कार्य करती हैं और कार्य हो जाने पर चली जाती हैं। इनके आशीर्वाद शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और भौतिक रूप से सहायक हैं। यह सब मांगने के लिए व्यक्ति को इच्छा नहीं करनी पड़ती क्योंकि चैतन्य लहरियाँ हमारी आवश्यकताओं को हमसे भी बेहतर समझती हैं और वे हमसे कहीं अधिक कार्य–कुशल हैं।

यद्यपि ऐसा लगता है कि हम सांसारिक उपलब्धियाँ प्राप्त करने में लगे हुए हैं फिर भी व्यक्ति इनमें लिप्त नहीं होता। करने के लिए या न करने के लिए कुछ नहीं रह जाता। फिर भी व्यक्ति अपने कर्तव्यों को करता रहता है और सांसारिक उत्तरदायित्व निभाता रहता है। परन्तु सब कुछ करते हुए भी वह स्वतन्त्र होता है।

इन्द्रियाँ मरती तो नहीं परन्तु आत्मा के नियंत्रण में होती हैं। आत्मा अपना ही आनन्द लेता है, बाहर से सन्तोष नहीं खोजता क्योंकि यह स्वयं ही सन्तोष का स्रोत है। मनुष्य अत्यन्त सृजनात्मक व्यक्तित्व बन जाता है। किसी विशेष शैली के बन्धन में बाँधे रखने वाले रेखीय विचारों तथा संरचनात्मक नमूनों (Linear Thinking and Structural Patterns) से व्यक्ति ऊपर उठ जाता है। अनन्तता के विस्तार में विविधता, समृद्धि एवं उल्लास का आनन्द लेने के लिए मनुष्य स्वतन्त्र हो जाता है। व्यक्ति की सृजनात्मकता मनुष्य की आन्तरिक जागृति और अनन्त की अवस्था को पृथक करती है। सृजनात्मकता का गुंजन अन्य लोगों की आत्मा को भी प्रेरित एवं जागृत कर सकता है। आत्मसाक्षात्कारी संगीतकार की आवाज़ श्रोताओं की आत्मा को जगा सकती है। गुरु नानक देव जी कहते हैं, ''हर हृदय में बजते हुए दिव्य संगीत को सुनो।''

व्यक्ति समय के बन्धनों से मुक्त हो जाता है। भूत और भविष्यत् काल का

अस्तित्व समाप्त हो जाता है और व्यक्ति केवल वर्तमान, 'यहाँ और अब' में रहता है। यह बात महसूस हो जाती है कि सभी कुछ नश्वर है तथा भौतिक पदार्थों में परिवर्तन अवश्यम्भावी है। परन्तु आत्मा भौतिक पदार्थ नहीं है, यह शाश्वत साक्षी है। जैसे पहले बताया गया, साक्षी अवस्था अहम् तथा बन्धनों से मुक्त होती है। साक्षी अन्तर्दर्शन करने लगता है और अन्तर्स्थित नाड़ियों और सूक्ष्म केन्द्रों को शुद्ध करने लगता है। इस कार्य को वह तब तक करता है जब तक ये चक्र और नाड़ियां दैवी दर्पण को प्रतिबिम्बित करने वाले दर्पण सम न हो जाएं। व्यक्ति में एक प्रकार की आन्तरिक दृढ़ता विकसित हो जाती है जो हालात के दबाव के भय से मुक्त होती है। यही दृढ़ता व्यक्ति को उसी प्रकार सभी दबावों से ऊपर बनाए रखती है जैसे कमल सदैव जल से ऊपर बना रहता है। भगवान कृष्ण ने आत्मा के इस फूल का वर्णन इस प्रकार किया है

'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावक:
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत:।।

इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकती। (भगवद् गीता अध्याय २, श्लोक–२३)

यह भली–भांति स्पष्ट हो गया है कि आत्मा किसी भी दुर्गुण से दूषित नहीं हो सकती और न ही किसी बुराई को इस पर थोपा जा सकता है। इस प्रकार आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाले सभी भावनात्मक आघात उन्नत स्थिति में आ जाते हैं। कुण्डलिनी की शक्ति के माध्यम से आत्म–नवीनीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है जो एक साथ अन्तर्शुद्धि तथा नवीनीकरण, दोनों कार्य करती है। बहुत से रोग और बीमारियाँ दूर हो जाते हैं और यहाँ तक की जीन्स भी परिवर्तित हो जाते हैं। सामूहिक साक्षात्कार के माध्यम से सामूहिक स्तर पर भी यही प्रक्रिया कार्य करने लगती है। आन्तरिक गहनता से कार्य आरम्भ करके यह नव समाज का ताना–बाना बुनती है। इस प्रकार विश्व भर के विशाल समूह सहजयोग के माध्यम से आत्म–साक्षात्कार प्राप्त कर रहे हैं और उनकी चैतन्य लहरियों के गुंजन से समाज उन्नत हो रहा है। विश्व–मदांधता को विश्व–मैत्री में शान्ति पूर्वक परिवर्तित करने, ब्रह्माण्डीय अस्तित्व को बनाए रखने तथा 'हम कौन हैं' से 'हम क्या बन सकते हैं' के

मानव जाति के स्वप्न को पूर्ण करने के लिए आत्म साक्षात्कार उत्प्रेरक (Catalyst) है। विलियम ब्लेक के 'स्वप्न के रहस्योद्घाटन' में कहा है, ''परमात्मा के बन्दे पैगम्बर बन जाएंगे।'' हाँ, ये लोग करुणा एवं विवेकमय स्त्री–पुरुष होंगे।

वर्ष दो हजार के प्राचीन स्वप्न का वचन देने वाली स्वर्णिम सहस्राब्दि का स्वागत करने के लिए तथा इक्कीसवीं शताब्दी का अभिषेक करने के लिए एक अन्य स्तर पर प्लूटो नक्षत्र तथा ब्रह्माण्डीय शक्तियाँ परिवर्तन–प्रक्रिया को आड़ोलित कर रही हैं।

# उपसंहार

नव सहस्राब्दि भिन्न आयामों का सान्निध्य भी होगी। यद्यपि सत्य साधकों के लिए यह बसन्त ऋतु होगी, परन्तु ईसा मसीह के वचनानुसार यह छटनी का समय भी होगा। इसका वर्णन कुरान में 'पुनरुत्थान दिवस' (Day of Resurrection) के रूप में किया है :

''उस दिवस हम उनके मुँह बन्द कर देंगे, उनके हाथ बोलेंगे और उनके पैर उनकी बुराईयों का साक्ष्य देंगे।'' (Sura 36:63)

''इस दिन आपके लिए इतना ही काफी होगा कि आपकी आत्मा हिसाब देने के लिए आपको बुलाए।'' (Sura 17:12)

प्रकाश को खोजने वाले चेतन अवस्था में उन्नत हो जाएंगे। बुराईयों के दल–दल में फँसे लोग लुप्त हो जाएंगे। सत्य में चमक उठने का उत्तम गुण है, जबकि असत्य में स्वयं को अनावृत्त करने का अन्तर्निहित गुण है। परन्तु इस अनावरण का कोई विशेष क्षण होता है। नव सहस्राब्दि का आगमन यह निर्णायक क्षण है।

सामूहिक स्तर पर भ्रष्टाचार, दमन, शोषण, सिद्धान्तवाद, धर्मान्धता और जातिवाद का पर्दाफ़ाश होगा। ब्रह्माण्डीय स्तर पर पंच–तत्व वीभत्स रूप धारण कर लेंगे।

## सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना पूर्व आज्ञा के इस पुस्तक के किसी भी भाग की प्रतिलिपि या किसी भी रूप में प्रसारण वर्जित है। कोई भी व्यक्ति अनधिकृत रूप से यदि इसका प्रकाशन करता है तो उस पर हानिपूर्ति का दावा किया जाएगा।

# प्राचीन भविष्यवाणियाँ सत्य सिद्ध करती हुई

# नव सहस्राब्दि

## योगी महाजन

परिस्थितीवश बाध्य होकर मनुष्य जाति टुकड़ों में खण्डित हो गयी पर नये सहस्रक में सामूहिक प्रेम का सामर्थ्य इस मनुष्य जाति को फिर एक बार एकत्रित बंध जाने के लिये विवश कर रहा है। प्राचिन प्रेषितों के भविष्यवाणी में कहा गया है कि साक्षात्कारी आत्माओं की सामूहिक चैतन्य लहरें उस प्रेम के सामर्थ्य को संवर्धित करने के लिये इस एक ही वस्तु की तरफ अभिमुख हो कर वहीं सम्मिलित होती जा रही है। हमारे आंतरिक सुप्त सामर्थ्य का संयोग इस उत्प्रेरक (परिवर्तनकारी) घटक से होगा और आत्मासाक्षात्कार को अलौकिक प्रक्रिया से (वैश्विक) पूरे विश्व का रूपांतरण होगा। इसी पुस्तक में यह सुप्त आंतरिक सामर्थ्य और उसके कारण होने वाले रुपांतरण के बारे में चकित करने वाले दिव्य स्वप्न या कल्पनायें प्रकट की गयी हैं।

पुस्तक के लेखक श्री योगी महाजन का जन्म वर्ष 1950 में नई दिल्ली में हुआ। नई दिल्ली विधी संकाय (Faculty of Law) के स्नातक श्री योगी महाजन न्यायधीशों के सुप्रसिद्ध परिवार से सम्बन्धित हैं।

वर्ष 1976 में परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी से उनकी अकस्मात भेंट हुई, जिसने उनके जीवन की दिशा को एक नया मोड़ दे दिया। तब से वे निरन्तर सहजयोग ध्यान धारणा में आनन्दमग्न हैं। उन्होंने बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं जिनमें से निम्नलिखित हैं :

1. उत्थान
2. Geeta Enlightened
3. परमात्मा का स्वरूप (The Face of God)